ISSN 2349-6614

फरवरी 2020

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रदूषण ने थामी परिंदों की परवाज़

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 17 अंक 12 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

INDIRA IVF
FERTILITY & IVF CENTRE

माँ से ममता की राह आसान

निःसंतान दम्पतियों हेतु आई.वी.एफ. एक वरदान

कौन दम्पती सम्पर्क कर सकते हैं?

- नलियों में रूकावट या अन्य कोई खराबी होना
- उम्रदराज महिलाओं में मासिक धर्म का बंद होना
- अंडों का न बनना एवं अंडों का समय पर न फूटना
- माहवारी अनियमित होना-अंडों का समय पर न फूटना

Helpline : 07665009964 / 65

Website : www.indiraivf.com

ADVANCED FERTILITY TREATMENT

- Blocked Tubes
- Egg Problem
- Low Sperm Count
- Old Age

इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पीटल प्राइवेट लिमिटेड

44 अमर निवास, एम.बी. कॉलेज के सामने, कुम्हारों का भट्टा, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर

निःसंतानता एवं आईवीएफ से जुड़ी सभी जानकारी के लिए सीधे सम्पर्क / कॉल करें ✆ 766 5018 650

उपलब्ध सेवा : फर्टिलिटी जाँच • IUI • IVF • ICSI • लेजर हेचिंग • ब्लास्टोसिस्ट • हिस्ट्रोस्कोपी • लेप्रोस्कोपी • डोनर सर्विसेज

- 83 Centres PAN India
- Treatment protocol as per individual need
- Patient friendly treatment options

'बेटी बचाओ/बेटी पढ़ाओ' अभियान में सहयोग करें। भ्रूण लिंग परीक्षण करवाना जघन्य अपराध है, यह कार्य हमारे यहां नहीं किया जाता है।

Disclaimer : The models used in the creative is just for illustration purpose only.

फरवरी
2020
वर्ष 17, अंक 12

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

14 सामयिकी

राज्यों से आउट होती भाजपा

22 सुलगता सवाल

बच्चों की मौत का जिम्मेदार कौन ?

24 माया नगरी

सिंघम का शतक

26 शिवरात्रि विशेष

सब गुणों का संगम है

34 विदेश

ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनियर प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

MITSUBISHI ELECTRIC
AIR CONDITIONERS

श्री कुंथुनाथसागराय नमः

Changes for the Better

Amit Jain
9829874881
9414160881

KUNTHU MACHINERY MART

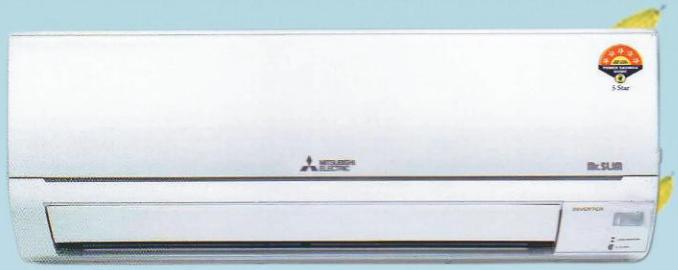

R32 REFRIGERANT

DC Inverter

(MUY-GN 10/13/15/18)

MS-GK 10/13 VA

LCD Remote Controller

Nano Platinum Filter
Grooved Piping
Auto Restart
Self-Diagnostic Function
Wide & Long Airflow (MSYGN 18, 22, 26)
24 Hour Timer
Fuzzy Logic "I Feel"

Econo Cool- Smart Save
Electrostatic Anti-Allergy Enzyme Filter (Optional)
Anti-Rust
Powerful Cool System (MSYGN 18, 22, 26)
I Save
DC Fan Motor

Auto Vertical Vane (MSYGN 18, 22, 26)
Auto Horizontal Vane
Poki Poki Motor
100% Copper Heat Exchanger

LCD Remote Controller

MS-GK 18/24 VA

MS-GK 10/13 VA

MS-GK 24 VA

MS-GK 18 VA

Mr. Slim
Range of Split Air Conditioner

SAVE R410A OZONE

5-B, Nakoda Complex, Kunthu Tower, Hiran Magri, Sector-4,
Main Road, Udaipur, Ph. : 0294-2467881
Mobile : 9829874881, 9414160881
Email : jainamit929@gmail.com

खाकी की शर्मनाक तस्वीर

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में जनवरी के पहले हफ्ते(5 जनवरी) में नकाबपोश गुण्डों ने जिस तरह छात्र-छात्राओं और प्राध्यापकों पर हमला बोला और पुलिस देखती रही, उसने भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों, संविधान, स्वाधीनता, कानून-व्यवस्था, मान-मर्यादा, मानवीय गरिमा, महिला सुरक्षा आदि सभी नीतिगत व्यवस्थाओं और न्यायोचित्त मूल्यों को धूल-धूसरित कर दिया। यह हमला किसी भी संवेदनशील और देश की चिंता करने वाले इन्सान को झकझोर देने वाली घटना थी। सरेआम इस तरह की अराजक हिंसा के बरक्स दिल्ली पुलिस के वतीरे को किस तरह देखा जाए? क्या यह पुलिस की क्षमता की सीमा है या फिर वह किसी पूर्वाग्रह अथवा किसी अघोषित निर्देश पर काम कर रही थी। जो पुलिस जामिया मिल्लिया परिसर में कथित हिंसा से निबटने का हवाला देकर बिना किसी हिचक के घुस गई थी और छात्र-छात्राओं की बेरहमी के साथ पिटाई की थी, उसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में नकाबपोश हमलावरों के झुण्ड से निबटना क्यों ज़रूरी नहीं लगा? स्थिति इस कदर बिगड़ी हुई थी कि विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार के बाहर भी मौजूद समाजकंटक हिंसक नारे लगा रहे थे, कैम्पस के भीतर जख्मी विद्यार्थियों व शिक्षकों की सहायता के लिए जाने वाली एम्बुलेन्स पर डण्डे-पत्थर बरसाए गए, हालात को शांत और काबू में लाने के प्रयास में लगे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तक को नहीं बख्शा गया और मारपीट की गई। यह सब होता रहा और पुलिस मूकदर्शक रही। क्या यही पुलिस की 'परिभाषा' और 'भूमिका' है? जिस तरह के वीडियो और तस्वीरें सामने आईं, उनसे तो यही लगता है कि हमला पूर्व नियोजित था। लाठी-डण्डों और सरियों से लैस गुण्डों को जैसे कोई अदृश्य सुरक्षा कवच मिला हुआ था, अन्यथा दिल्ली के हर चौराहे पर लगे होर्डिंग्स में 'दिल्ली पुलिस सदैव आपके साथ है' का नारा यहां क्यों दम तोड़ता दिखाई पड़ता। इस बात से कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की न केवल भारत अपितु विदेशों में भी शैक्षिक स्तर और शोध कार्यों को लेकर अच्छी साख है।

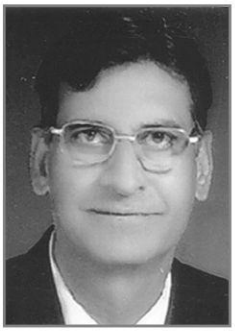

देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही दूसरे देशों से भी विद्यार्थी यहां अध्ययन और शोध के लिए आते हैं। यह देश के आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर वर्ग-परिवारों के लड़के-लड़कियों के लिए भी एक मुफीद शिक्षण केन्द्र है। नया साल आते-आते विश्वविद्यालय के छात्रावास के शुल्क सहित कुछ अन्य मदों में फीस-वृद्धि कर दी गई, जिसे लेकर विद्यार्थियों में चिंता-बैचेनी होना स्वाभाविक था और उन्होंने शांतिपूर्ण तरीके से इसका विरोध शुरू किया। आज देश में जिस तरह से शिक्षा के व्यावसायिकरण को केन्द्र अथवा राज्य की सरकारें प्रश्रय दे रही हैं, यदि ऐसा ही रहा तो देश के गरीब, मध्यम और वंचित वर्ग के परिवारों के बच्चे शिक्षा से दूर होते जाएंगे जो देश के विकास के लिए अन्ततोगत्वा नुकसानदेह होगा। शिक्षा के खर्च को बे लगाम किया जाना किसी भी दृष्टि से जायज नहीं ठहराया जा सकता। कुकुरमुत्तों की तरह देश के हर शहर में धनाढ्य घरानों द्वारा शिक्षा को व्यापार बना लिया गया है और सरकारें उनका पृष्ठ बल बन कर गरीब व मध्यम दर्जे के परिवारों के बच्चों को उच्च शिक्षा के हक़ से वंचित रखने के षड़यंत्र में शामिल हो रही हैं।

फीस वृद्धि के मुद्दे पर विश्वविद्यालय प्रशासन और विद्यार्थियों के बीच रस्साकशी चल ही रही थी कि इसी बीच नागरिकता संशोधन कानून पर भी छात्रों ने ऐतराज जताते हुए उसे भी अपने आन्दोलन में जोड़ लिया। ऐसा होते ही बाहरी तत्वों ने विश्वविद्यालय परिसर में घुसकर उन पर हमला बोल दिया। यह पहली बार भी नहीं था कि विद्यार्थियों ने किसी मुद्दे पर विरोध दर्ज कराया है, विश्वविद्यालय के छात्र जन सरोकार से सम्बद्ध तमाम मुद्दों पर हस्तक्षेप और प्रदर्शन करते रहे हैं, यह उनका हक़ भी है और एक जागरूक नागरिक की तरह कर्तव्य भी। लेकिन यह समझ से परे है कि लोकतांत्रिक प्रणाली में इस तरह के स्वस्थ विरोध से किसी को कैसे और क्यों दिक्कत हुई कि वे विद्यार्थियों की जान तक से खेलने परआमादा हो उठे। इस तरह की सरे आम गुण्डागर्दी को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन और दिल्ली पुलिस की जो भूमिका सामने आई, वह शर्मनाक है। इससे न केवल कानून-व्यवस्था और विश्वविद्यालय की साख को बट्टा लगा है, अपितु देश की छवि को भी भारी चोट पहुंची है।

जेएनयू विश्वविद्यालय प्रशासन और सरकार इस प्रश्न का आज तक जवाब नहीं दे पाए हैं कि जिस कैम्पस में प्रवेश करने तक के लिए किसी भी बाहरी व्यक्ति को एक औपचारिक पूछताछ और जांच की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, उसमें नकाबपोश हमलावरों का सशस्त्र झुण्ड कैसे घुस गया, जिसने दो-ढाई घण्टे तक आतंक मचाते हुए जो सामने आया उस पर वार किया। यही नहीं वे लड़कियों के छात्रावास तक में प्रवेश कर गए और जानलेवा हमला किया।

सरकार को गंभीरता से इस घटना की जांच तो करनी ही होगी और दोषियों को दण्डित भी करवाना होगा लेकिन उसे यह जिम्मेदारी भी सुनिश्चित करनी है कि वह भविष्य के लिए शिक्षा के परिसरों और विद्यार्थियों के हितों को पर चोट नहीं पहुंचने देगी। वैश्विक स्तर के इस विश्वविद्यालय की छवि को जो नुकसान पहुंचा है, उसकी भरपाई आसान नहीं होगी।

THE STUDY
Udaipur
KNOWLEDGE IS POWER

PREMIER
CBSE SCHOOL

All set to get a

RUNNING

start for your child?

THE STUDY

Estd. 1982

SCIENCE | COMMERCE | ARTS

BADI, UDAIPUR

0294-2431825 / 2453569

www.facebook.com/thestudybadi/

ADMISSION OPEN
FOR 2020/21
GRADES 1-12

थमी मेहमान परिन्दों की परवाज़

✍ मदन पटेल

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण का प्रभाव इंसानों की सेहत पर तो पड़ा ही है, पशु-पक्षी भी इससे अछूते नहीं हैं। राजस्थान की सांभर झील में 23 हजार से ज्यादा देसी-विदेशी पक्षियों की मौत होना इसी का एक संकेत है। हर साल उत्तर प्रदेश उन्नाव के नवाबगंज पक्षी विहार, कानपुर, बरेली-लखीमपुर खीरी से लेकर मेरठ-मुरादाबाद तक नदियों, तालाबों, पक्षी विहारों और अन्य वन्यजीव केन्द्रों में लाखों प्रवासी पक्षी आते हैं, लेकिन इस बार इनकी संख्या एक तिहाई तक घट गई है। उत्तरप्रदेश ही नहीं, बिहार, झारखंड, दिल्ली से लेकर उत्तराखण्ड तक ऐसी ही चिंताजनक तस्वीर उभर कर सामने आई है।

उत्तर प्रदेश के गौरखपुर जिले के महाराजगंज की सोहगीबरवा सेंचुरी स्थित सिगरैना और दर्जीनिया ताल उत्तरी पूर्वांचल में प्रवासी पक्षियों के सबसे प्रमुख रेस्टिंग पैड हैं। यह ताल रेड क्रस्टेड कोचार्ड, बूट, कामन टील जैसे साइबेरियन पक्षियों के कलरव से गूंजता है। परागपुर ताल, सरुआ ताल प्रवासी पक्षियों का ठिकाना है। सन् 2018 में सिगरैना ताल में 94 प्रजातियों के पक्षी देखे गए थे। दिसम्बर 2019 तक 60 प्रतिशत पक्षी ही आए हैं। रामगढ़ झील में 80 से ज्यादा प्रजातियों के पक्षी आते हैं। दो साल पहले अमूर फाल्कन नाम का दुर्लभ प्रवासी पक्षी सिगरैना ताल में देखा गया था। फिर यह नहीं दिखा।

बखिरा झील में आमद कम : संत कबीरनगर की बखिरा झील में (दिसम्बर-जनवरी) पक्षियों की आमद और वर्षों के मुकाबले कम है। अमूमन 15 नवम्बर तक 70 प्रतिशत पक्षी आ जाते थे। इस वर्ष ठंड में कुछ देरी की वजह से संख्या 30-40 प्रतिशत ही है। नकटा प्रवासी पक्षी पिछले साल से दिखाई दे रहा है। उधर, वाराणसी समेत पूर्वांचल के सभी जिलों में ठंड बढ़ने के साथ लालसर, साइबेरियन सारस व अन्य प्रवासी पक्षियों का आना शुरू हो गया है। प्राय: प्रवासी पक्षी नवम्बर-दिसम्बर महीने में ही आते हैं। वाराणसी में नवम्बर से ये पक्षी आने लगे। तिब्बत-चीन के मानसरोवर क्षेत्र से आने वाले प्रवासी परिन्दे जिन्हें गल के नाम से जाना जाता है।

लखनऊ : प्रदूषण के कारण पक्षी एक माह बाद आने लगे : जाड़े में पक्षी विहार और उद्यानों में विदेशी पक्षियों का आगमन इस बार अक्तूबर की जगह नवम्बर में देखा गया। अक्तूबर के आखिरी सप्ताह में पक्षियों से गुलजार रहने वाले नवाबगंज पक्षी विहार में इस बार पक्षियों का आना नवम्बर के आखिरी हफ्ते व दिसम्बर के पहले में शुरू हुआ। आसमान की ऊपरी सतह पर प्रदूषण की परत से पक्षी नीचे नहीं आ पाते। धुआं उनकी सांस में जाने से वे आगे बढ़ जाते हैं। प्रदेश में मंगोलिया, चीन समेत कई ठंडे इलाकों से पक्षी हर साल उत्तर भारत में आते हैं। पिछले साल के मुकाबले अभी तक कम पक्षी ही आए हैं।

उन्नाव : बड़े परिन्दों का आना कम

उन्नाव के नवाबगंज पक्षी विहार में इस बार 20-25 हजार पक्षियों की मेजबानी का अनुमान है। इस बार इनके आने का समय देर से शुरू हुआ। प्रदेश में अन्य देशों के करीब 200 तरह के पक्षी प्रवास करने आते हैं। इनमें साइबेरियन क्रेन, कॉमन कोट, मॉर्गन पिनटेल, इसटोड बिल्डर, अमूर फाल्कन, डेमोइसेल क्रेन शामिल हैं। एक-दो साल से छोटे पक्षी ज्यादा आ रहे हैं, बड़े कम हो गए हैं। बड़े पक्षियों की मुख्य प्रजातियां जो आई हैं, उनमें कॉमन टेल, गार्गनी, नॉर्थन पिनफॉल, कॉमन पोचर्ड, रेड क्रिस्टेड पोचर्ड, फेरोजीनस पोचर्ड और नॉर्थन शोवलर हैं। ये पक्षी खास तौर पर हिमालय पर्वत की असीम ऊंचाइयों को पार कर यूरोप, साइबेरिया, मंगोलिया, मध्य एशिया के हैं। रायबरेली जिलों में स्थित पक्षी विहारों में भी इन पक्षियों को देखा जाता है। इसके अलावा लखीमपुर खीरी में भी तादाद दिसम्बर के अन्त तक कम ही देखी गई।

देहरादून : आसन बैराज पहुंचे परिन्दे

उत्तराखंड के बैराज, नदी तट और तराई के छोटे बांध सुदूर साइबेरिया, चीन और यूरोप के हर साल शीतकालीन प्रवास पर आने वाले मेहमान पक्षियों के कलरव से गुलजार हैं। अब तक सबसे अधिक चार हजार से अधिक विदेशी परिन्दे देहरादून जिले के आसन बैराज पहुंचे हैं। जाड़ा बीतने के बाद मार्च के पहले हफ्ते से इनकी वापसी का सिलसिला शुरू होता है। आसन बैराज में पक्षियों की संख्या अधिक होने के चलते विदेशी परिन्दे अब डाक पत्थर बैराज में भी डेरा डालने लगे हैं। पिछले चार वर्षों से लगातार एक से डेढ़

अगर सरकार चाहे तो प्रदूषण जैसी समस्या से निपटना कोई मुश्किल काम नहीं है। लेकिन सिर्फ दिल्ली में ही नहीं, पूरे देश में वायु प्रदूषण से निपटने को लेकर सरकारों का जो रवैया देखने को मिला है, वह दुखद है। दिल्ली में चार साल पहले भी वायु प्रदूषण की वजह से स्वास्थ्य इमरजेंसी घोषित की गई थी। वायु प्रदूषण को लेकर संयुक्त राष्ट्र से लेकर तमाम पर्यावरण संस्थाओं की जो रिपोर्ट आई हैं, उनमें शीर्ष शहरों में भारत के ही शहर ज्यादा हैं। जाहिर है, वायु प्रदूषण से निपटने में सरकारों में गंभीरता का अभाव रहा है। शहरों में चलने वाले वाहन और उद्योग भी प्रदूषण का बड़ा कारण रहे हैं।

हजार की संख्या में विदेशी परिंदे यहां पहुंचते हैं। अफगानिस्तान में कई वर्ष से युद्ध जारी रहने के कारण साइबेरियन क्रेन का भारत आना बंद हो गया। क्योंकि यह पक्षी अफगानिस्तान-पाकिस्तान के रास्ते भारत पहुंचते थे।

मुरादाबाद : प्रदूषण से घटी आमद

प्रदूषण और मौसम में बदलाव के कारण पिछले साल के मुकाबले इस बार मुरादाबाद मंडल में प्रवासी पक्षियों की आमद कम हुई है। मुरादाबाद जिले में विदेशी परिंदे राम गंगा नदी में आते हैं, लेकिन मौसम में बदलाव के कारण इनकी संख्या साल दर साल कम होती जा रही है। बिलारी की हाजीपुरी झील में तो पानी की कमी के कारण इस साल न के बराबर पक्षी आए। रामपुर में भी मौसम में बदलाव और प्रदूषण से प्रवासी पक्षी घटे हैं। अमरोहा में इस बार साइबेरियन पक्षी नहीं आए। तराई-भाबर के सितारगंज में बैगुल, नानक सागर और ढौरा जलाशयों में इस बार प्रवासी पक्षियों की संख्या में 50 फीसदी की गिरावट आई है। यह संख्या पांच साल में डेढ़ लाख से गिरकर 60 हजार रह गई है।

मेरठ : बूढ़ी गंगा से रूठ रहे

हस्तिनापुर सेंचुरी में प्रवासी पक्षियों का कलरव गूंजने लगा है, लेकिन बेहद धीमा। प्रदूषण और मौसम में बदलाव के कारण प्रवासी पक्षियों ने हस्तिानापुर सेंचुरी को अपना ठिकाना इस बार सर्दी में विलम्ब से बनाया है। गंगा किनारे बिजनौर में हैदरपुर झील से लेकर नरैरा बैराज तक गंगा में प्रवासी पक्षी सर्दियों में पानी में रहते हैं। मेरठ में बूढ़ी गंगा की झील, भीकुंड गांव के पास झील, खेड़ी कला में गंगा के टापू पर, जलालपुर जोरा आदि मेहमान पक्षियों के ठिकाने है। यूं तो इनकी संख्या में बढ़ोतरी हो रही, लेकिन बूढ़ी गंगा इलाके से प्रवासी पक्षी रूठ रहे हैं और वह यहां से किनारा कर रहे हैं। इसकी वजह क्षेत्र में पट्टे काट देने और अतिक्रमण के कारण लोगों का बढ़ता दखल है।

रांची : चीन की ओर रूख

झारखंड में प्रवासी पक्षियों की संख्या में 15 दिसम्बर के बाद बढ़ोतरी हुई। राज्य के तिलैया, खंडोली, पतरातू, चड़वा और गेतलसूद डैम में प्रवासी पक्षी दिखने लगे हैं। तोपचांची, उधवा, मसानजोर, सिकटिया, महागामा, सुंदर पहाड़ी, मैथन, पोड़ैयाहाट, गरगा, तेनुघाट में भी इनका आना दिसम्बर तक जारी था। इन पक्षियों में गडवाल, नॉदर्न शोवेलर, बार हेडेड गोस, रेड क्रस्टेड पोचर्ड, टफटेड पोकार्ड, पिंकटेल की प्रजाति प्रमुख है। साइबेरियन ट्रेल पक्षी पिछले कई वर्षों से झारखंड में नहीं दिखे। विदेशी पक्षी मेहमानों को अच्छा भोजन और प्रजनन के लिए अनुकूल वातावरण नहीं मिले तो वे दोबारा नहीं आते। यही कारण है कि साइबेरियन पक्षी बड़ी संख्या में अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान, इराक के रास्ते झारखंड की बजाए सीधे चीन की शांत झील की ओर हैं।

पांच प्रमुख वजहें

1. सर्दियों में तापमान ज्यादा न गिरना, वायु और जल प्रदूषण का स्तर बढ़ना
2. जलाशयों के आसपास कर्कश आवाज वाले मोटर बोट से भी परेशानी
3. पिकनिक के बढ़ते चलन से शोरशराबा
4. पेड़ों की कटाई, जलाशयों का घटता जलस्तर
5. धुंध के कारण रास्ता भी भटक जाते हैं परिन्दे, पक्षियों का शिकार भी कारण

यहां से आते हैं पक्षी : मंगोलिया, चीन, यूरोप, साइबेरिया, तिब्बत

बिहार : कम वक्त बिता रहे

भागलपुर सहित कोसी, सीमांचल और पूर्वी बिहार के जिलों में प्रवासी परिन्दे अब कम वक्त बिताने लगे हैं। पहले जहां करीब पांच माह तक गंगा किनारे वे अपना वक्त बिताते थे, अब वह अवधि घटकर चार माह हो गई है। पर्यावरणविद् इसका कारण गंगा में पानी कम होना, ठंड के दिनों की संख्या कम होना और प्रवास स्थल के आसपास प्रदूषण और बढ़ती आबादी मानते हैं। चीन, तिब्बत, साइबेरिया, रूस, कजाकिस्तान, मंगोलिया से आने वाले खंजन, फलक, चाहा, अधंगा, सारस, डक, ब्लैक डक, क्रेन, लालसर, करला, टिकारी, सरखाब, दिघोंचा, सरार, अरुण हर साल सितम्बर-अक्टूबर में ही प्रवास के लिए आते थे और फरवरी-मार्च तक जाते थे। लेकिन अब ये नवम्बर-दिसम्बर तक आते हैं और फरवरी मध्य से इनका जाना आरंभ हो जाएगा।

नोएडा : 30 प्र.श. की कमी

ओखला पक्षी विहार, धनौरी और सूरजपुर वेटलैंड में पक्षियों की संख्या कम है। ओखला पक्षी विहार में संख्या में करीब 30 फीसदी तक की कमी दर्ज की गई है। ग्रेट वाइट, पेलिकन्स, बार हेडेड हंस, कॉमनशेल्डक समेत विभिन्न

प्रजातियों के पक्षी अभी तक कम ही दिखे हैं। इसकी वजह प्रदूषण बताई जा रही है। हर साल अब तक विभिन्न प्रजातियों के करीब दस हजार पक्षियों की उपस्थिति दर्ज की जाती थी लेकिन इस वर्ष यह संख्या अभी छह-सात हजार के आसपास है। धनौरी और सूरजपुर वेटलैंड में दिसम्बर-जनवरी से पक्षी पहुंचने शुरू हुए हैं।

गुरुग्राम : 55 हजार पक्षी पहुंचे

राजस्थान की सांभर झील में प्रवासी पक्षियों के मरने की खबर के बाद गुरुग्राम के सुल्तानपुर पक्षी अभ्यारण्य में पक्षियों को लेकर विभागीय अफसर सतर्क हो गए हैं। इस झील में हर साल 80 हजार तक प्रवासी पक्षी पहुंचते हैं। दिसम्बर तक 55 हजार विदेशी परिन्दे अपनी आमद दर्ज करा चुके हैं। वन्य जीव विभाग का दावा है कि बीते साल के मुकाबले कुछ पक्षी कम आए हैं।

कन्नौज में आधी रह गई संख्या

कन्नौज में पक्षी विहार तिर्वा-इंदरगढ़ से करीब 36 किमी दूर लाख व बहोसी गांव के बीच में है। इन दो गांवों के बीच विशाल झील है। इसलिए इस झील का नाम भी लाख-बहोसी झील है। यहां पक्षियों के आने की संख्या आधी रह गई है। वर्ष 2016-17 तक यहां एक लाख प्रवासी पक्षी आते थे। पक्षियों के आने का क्रम नवम्बर में ही शुरू हो जाता था, लेकिन दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक 30 से 35 हजार ही आए हैं। पहले यहां 20 प्रजातियों के 40-45 हजार विदेशी पक्षी यहां आते थे, लेकिन अभी 20 फीसदी आए हैं। प्रवासी पक्षियों का झुंड नवागंज पक्षी बिहार और भरतपुर की केवलादेव बर्ड सेंचुरी की ओर चला जाता है।

कानपुर : सर्दी कम पड़ने से दूसरी जगह ठिकाना

प्रदूषण की वजह से प्रवासी पक्षियों की संख्या 30 प्रतिशत तक घट गई है। एशिया के सबसे बड़े चिड़ियाघर में गंगा नदी से जुड़ी होने के कारण कभी न सूखने वाली एलन फारेस्ट झील है। यह झील 18 हेक्टेयर में फैली है।

यहां कभी 50 से 60 प्रजातियों के 15 से 20 हजार के आसपास साइबेरियन पक्षी आते थे, लेकिन इस बार 30 प्रतिशत संख्या घट गई है। खास बात यह है कि पक्षी सितम्बर में आ जाते थे। इस बार दिसम्बर तक इंतजार रहा। प्रदूषण और उपयुक्त माहौल न मिलने से यहां आने वाले पक्षी नवागंज पक्षी बिहार और भरतपुर की केवलादेव बर्ड सेंचुरी चले जाते हैं। शीतचक्र घटना भी एक बड़ी वजह है। कानपुर चिड़ियाघर में साइबेरियन प्रजाति के ब्लैक हेराल्ड, स्नेक बर्ड, कार्बोनेट, ओपेन बिल्ड स्टार्क, पिंटेड स्टार्क और डार्टर जैसे परिन्दे खास रूप से आकर्षण का केंद्र रहते हैं।

Ph. : 0294-2493357, 2493358
2494457, 2494458, 2494459
9829665739, 9680884172
869633357, 8696904457
8696904458, 8696904459

Website : www.shreejproadlines, shreejppackersandmovers

King Of Mini Truck

प्रो. गौतम पटेल
9414471131
8696333358

॥ जय हनुमन्ते नमः॥

श्री J.P. Roadlines

प्लॉट नं. 1/200, प्रताप नगर, सुखेर, बाईपास रोड,
सामुदायिक भवन के पास, प्रताप नगर, उदयपुर (राज.)

B.O. : No. 136, R.K. Puram Vill. Gokul, N.H. 8 Udaipur (Raj.)

सम्पूर्ण भारत के लिए मिनी ट्रक सेवा **TATA, 407, 709, 909, LPT,** केन्टर व आईशर दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, गुजरात एवं ऑल साउथ के लिए डोर टू डोर डिलीवरी के लिए उपलब्ध है।

श्री **J.P. Roadlines, 136-R.K.** पुरम मेनरोड, नेशनल हाईवे-8, उदयपुर

भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग

मुख्यमंत्रित्व के दूसरे वर्ष में गहलोत के निशाने पर माफिया भी

राजस्थान में घूसखोर या आय से अधिक सम्पत्ति का संग्रहण करने वालों के खिलाफ अब आम आदमी कार्रवाई करवाने की पहल कर सकेगा। उसकी सूचना के सत्यापन के तुरन्त बाद भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो(एसीबी) कार्रवाई करेगी। इसके लिए हेल्प लाइन नम्बर 1064 नए साल (2020) की शुरूआत के साथ ही सक्रिय हैं।

✍ मनीष उपाध्याय

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मंशा के मुताबिक एसीबी ने पिछले साल (2019) भी प्रदेश में भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए हर स्तर पर कठोर तेवर दिखाते हुए कार्रवाई की थी। इस दौरान 424 अभियोग पंजीबद्ध किए गए, जबकि 2018 में 327 मामले दर्ज किए गए थे। इस तरह 2019 में भ्रष्टाचार के 52 अधिक केस दर्ज हुए। अधिकारियों-कर्मचारियों की ओर से घूस लेने या मांगने के सम्बन्ध में 309 प्रकरण दर्ज हुए, जिनमें 61 राजपत्रित अधिकारी और 248 अपराजपत्रित अधिकारी-कर्मचारी शामिल हैं। आय से अधिक सम्पत्ति के मामले में 27, पद का दुरूपयोग करने से सम्बन्धित आरोप पर 88 प्रकरण दर्ज हुए।

238 मामलों में चालान : सन् 2019 में 238 प्रकरणों में दोषी अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ चालान और 98 प्रकरणों में एफआर पेश की गई। इसके अलावा 14 प्राथमिक जांच दर्ज की गई। पूर्व के वर्षों में दर्ज प्राथमिक जांचों सहित 50 प्राथमिक जांचों का निस्तारण किया गया।

खाकी में सर्वाधिक घूसखोर : राजस्थान पुलिस की कलफ लगी वर्दी यूं तो साफ-सुथरी और धारदार दिखती है, लेकिन इस महकमे में सेवाएं देने वालों में ऐसे मनोमस्तिष्कों की भी कमी नहीं है जिनमें जल्दी से जल्दी लखपति-करोड़पति बनने की लालसा के कीड़े भी कुलबुलाते रहते हैं। पिछले वर्ष पुलिस विभाग से सम्बन्धित भ्रष्टाचार के सबसे ज्यादा 90 मामले दर्ज हुए। राजस्व विभाग के 53, पंचायतराज के 30, ऊर्जा विभाग के 19, शिक्षा विभाग के 14, नगरीय विकास एवं स्थानीय निकाय के 12, चिकित्सा विभाग के 10 अधिकारी-कर्मचारियों के खिलाफ मुकदमे दर्ज किए गए।

राजपत्रित अफसर भी लपेटे में : शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार संबंधी पिछले वर्ष 14 मामले दर्ज हुए,

डॉ. आलोक त्रिपाठी (डीजी)

उनमें से नौ मामले तो राजपत्रित अधिकारियों के खिलाफ ही दर्ज हुए, जबकि अराजपत्रित अधिकारी-कार्मिकों के खिलाफ केवल पांच प्रकरण पंजीबद्ध हुए। चिकित्सा विभाग में राजपत्रित और अराजपत्रित कार्मिकों ने भ्रष्टाचार के मामलों में सन्तुलन बनाए रखा। इन दोनों वर्गों में 5-5 मामले दर्ज हुए। नगरीय विकास एवं स्थानीय निकाय विभाग में पिछले साल राजपत्रित अफसर बेदाग निकले जबकि सभी 12 प्रकरण अराजपत्रित कार्मिकों के खिलाफ दर्ज हुए।

सौरभ श्रीवास्तव (एडीजी)

142 मामलों में सजा : अभियोजन से सम्बन्धित मामलों में कुल 282 प्रकरण निस्तारित हुए। न्यायालय के माध्यम से 142 मामलों में सजा हुई, जो 54.40 प्र.श. है। ट्रैप में 124, पद के दुरूपयोग में 13 एवं आय से अधिक सम्पत्ति अर्जन के पांच प्रकरणों में सजा हुई। बरी होने वालों की संख्या और सम्बद्ध मामलों में कार्रवाई और पैरवी पर प्रश्न चिन्ह ज़रूर खड़ा करती है। पिछले साल भ्रष्टाचार के अभियोजन मामलों में 119 आरोपी बरी हो गए। जिनमें सर्वाधिक 93 ट्रैप में, पद के दुरूपयोग में 18 और आय से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने के 8 मामले थे। इक्कीस मामलों में आरोपियों की मौत से मामले ड्रॉप हुए।

सामयिक पहल : मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्रित्व की अपनी तीसरी पारी के पहले वर्ष में जनोपयोगी अनेक योजनाओं ओर कार्यों का निष्पादन तो किया ही है, भ्रष्टाचार के खिलाफ उनका कदम इन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण इसलिए माना जाएगा क्योंकि भ्रष्टाचार रूपी दीमक विकास के प्रवेश द्वार को ही खोखला करती ही जा रही है। नए वर्ष में भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग में आमजन को हेल्पलाइन के रूप में हथियार सौंपने की उनकी पहल को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और हर महकमे और उसके कारिंदों की कारगुजारी पर आम आदमी को अपनी पैनी निगाह रखनी चाहिए।

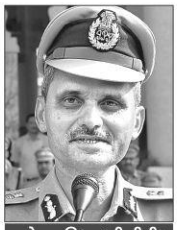
भूपेन्द्र सिंह (डीजीपी)

मध्यप्रदेश में कांग्रेस की कमलनाथ सरकार की ही भांति गहलोत राजस्थान में माफियाओं पर नकेल कसने को लेकर प्रदेश पुलिस को सख़्त लफ्ज़ों में आगाह कर चुके हैं। इसमें राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होने देने का भी मुख्यमंत्री ने अपना मानस स्पष्ट कर दिया है। इन माफिया गिरोह से समाज भयभीत और डरा हुआ है। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप डीजीपी भूपेन्द्र सिंह माफियाओं के खिलाफ सख़्त कार्रवाई का संदेश रेंज आइजी और जिला पुलिस अधीक्षकों को नए साल के पहले हफ्ते में ही भेज चुके हैं।

राजस्थान में सक्रिय माफिया

अवैध मादक पदार्थों की तस्करी, अवैध शराब की तस्करी, अवैध हथियारों की तस्करी, खनन माफिया अपराध, मानव तस्करी, मिलावट व नकली पदार्थों संबंधी अपराध, जाली मुद्रा की तस्करी, भर्ती कोचिंग/नकल माफिया, चिकित्सा क्षेत्र में संगठित माफिया, साइबर माफिया, सोशल मीडिया अपराध, स्टेट हाईवे/नेशनल हाईवे पर अवैध व्यवसायिक गतिविधियां, फर्जी बीमा माफिया, भू-माफिया, गौ-तस्करी व पशुधन चोरी माफिया, ब्लैकमेलिंग माफिया, सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वाला माफिया राजस्थान में पिछले कुछ सालों से ज्यादा ही सक्रिय भी है।

डेढ़ करोड़ से ज्यादा की राशि लेते पकड़े

एसीबी ने वर्ष 2019 में ट्रैप के 309 प्रकरण दर्ज कर घूसखोरों से एक करोड़ 58 लाख 60 हजार रुपए की राशि बरामद की। इस दौरान आय से अधिक सम्पत्ति के प्रकरणों में कुल 83 करोड़ 48 लाख 82 हजार रुपए के संबंध में जांच जारी है। इनमें 14 प्रकरण राजपत्रित अधिकारी एवं 13 प्रकरण अराजपत्रित अधिकारियों-कर्मचारियों के विरूद्ध दर्ज हैं। सालभर में 312 लोगों को रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया। इनमें 48 राजपत्रित अधिकारी तथा 264 अराजपत्रित एवं प्राइवेट एजेन्सियों से सम्बंधित लोग हैं। एसीबी ने दो दर्जन से ज्यादा महिलाओं के खिलाफ प्रकरण दर्ज हुए हैं।

आय से अधिक संपत्ति का खुलासा

ब्यूरो ने जयपुर में सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता (विद्युत) के यहां दो करोड़ रुपए से अधिक, जोधपुर में पुलिस निरीक्षक के 53 लाख रुपए, नारकोटिक्स विभाग के सहायक आयुक्त के 13 करोड़ से अधिक, नगर विकास न्यास उदयपुर के वरिष्ठ अधिकारी के एक करोड़ 39 लाख, उदयपुर टीएडी विभाग में वित्तीय सलाहकार के तीन करोड़ 81 लाख, जयपुर में कृषि विपणन बोर्ड के उपनिदेशक के 4 करोड़ 39 लाख, उदयपुर में अधीक्षण खनिज अभियंता के 3 करोड़ 87 लाख और सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग के एनालिस्ट कम प्रोग्रामर के यहां एक करोड़ 58 लाख रुपए से वैद्य आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के प्रकरण शामिल हैं।

राज्यों से आउट होती भाजपा

राष्ट्रीय दलों की ताकत घटी, क्षेत्रीय दल हुए मज़बूत, झारखण्ड भी निकला भाजपा के हाथ से

✍ रेणु शर्मा

झारखण्ड विधानसभा के नवम्बर-दिसम्बर 2019 में हुए चुनावों के परिणाम अप्रत्याशित तो नहीं थे, लेकिन मौजूदा दौर की राजनीतिक उथल-पुथल में भारतीय जनता पार्टी के लिए यह एक महत्वपूर्ण संदेश है। राज्य में पिछले पांच साल से सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा। चुनाव नतीजों से जहां कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों में नई ऊर्जा का संचार हुआ, वहीं महाराष्ट्र के बाद बहुत जल्दी ही भाजपा को एक और बड़ी शिकस्त से रूबरू होकर नीचा देखना पड़ा है। इस चुनाव परिणाम के निहितार्थ का आंकलन करें तो वे यह संकेत भी देते हैं कि क्षेत्रीय दलों के साथ गोलबंदी कर भाजपा को मात देने की कांग्रेस की सियासी रणनीति मुफीद साबित हो रही है। साथ ही यह भी साफ हो गया है कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने, तीन तलाक, अयोध्या विवाद फैसले से लेकर नागरिकता संशोधन कानून और एनआरसी जैसे बड़े मुद्दे भी सूबों की सत्ता विरोधी लहर को बदलने में कामयाब नहीं रहे।

मतदाताओं ने झारखण्ड में एक आदिवासी नौजवान पर भरोसा जताते हुए उसे सूबे के नए निजाम की जिम्मेदारी सौंप दी है। भाजपा यहां अपने को अजेय मान रही थी। पूरा चुनावी प्रबंधन और रणनीति अपने मुख्यमंत्री रघुबरदास को सौंप कर वह निश्चिंत हो गई थी। टिकट बटवारे से लेकर उम्मीदवारों के चयन तक का काम उन्हें दिया गया। कई दल-बदलु और दागियों तक को उन्होंने अपने सम्बंधों के चलते उपकृत किया। गठबंधन के सवाल पर वे कभी भी आजसू के साथ सद्भाव नहीं बना पाए। आजसू अध्यक्ष सुदेश महतो के साथ उनकी संवादहीनता की स्थिति ने काम बिगाड़ दिया। भाजपा आलाकमान गठबंधन के पक्ष में थी, लेकिन स्थानीय नेतृत्व की ज़िद के आगे उसने हथियार डाल दिए। कुल मिलाकर अति आत्मविश्वास ने उसे डूबो दिया। हार की सबसे बड़ी वजह बनी, रघुबरदास सरकार द्वारा स्थानीय मुद्दों को भुला दिया जाना। जबकि झामुमो-कांग्रेस महागठबंधन ने स्थानीय मुद्दों जल-जंगल-जमीन को अपना हथियार बनाया, जिसने रण जीत लिया। लोकसभा चुनाव में झारखण्ड के मतदाताओं ने दिल खोलकर भाजपा को वोट दिए और 14 में से 12 सीटें उसकी झोली में डाली थी। इसके कुछ माह बाद ही होने वाले विधानसभा चुनावों में मतदाताओं ने राज्य की सत्ता उसके हाथ से छीनकर किसी अन्य को सौंप दी। इससे पहले राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ फिर हरियाणा और बाद में महाराष्ट्र में भाजपा अपने अहंकार के चलते सत्ता खो चुकी है, यह अलग बात है कि हरियाणा में उसने जोड़-तोड़ कर सरकार बना ली। किन्तु चल तो बैसाखी के सहारे ही रही है। मतलब साफ है कि देश की जनता किसी एक दल पर आंख मूंद कर भरोसा करने को अब कतई तैयार नहीं है। जिस दौर में भाजपा की ओर से देश भर में एक छत्र राज्य के दावे किए जा रहे थे, क्षेत्रीय पार्टियों के महत्व को कम करके आंका जा रहा था, उसमें उसे मुख्य चुनौती क्षेत्रीय दलों से ही मिलती दिख रही है। देश के 28 राज्यों में से 13 में क्षेत्रीय दलों की अथवा क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन की सरकारें चल रही हैं। पिछले काफी समय से झारखण्ड से आने वाली खबरें राज्य सरकार की कम होती लोकप्रियता का संकेत भी कर ही रही थीं। आदिवासी बनाम गैर आदिवासी का मुद्दा भी रह-रह कर सामने आ रहा था। भाजपा क्षेत्रीय दलों से गठबंधन न कर अकेले चुनाव लड़ रही थी और विरोधी लगभग एकजुट थे। भाजपा के भीतर का असंतोष और बगावत भी उसकी हार की वजह बना।

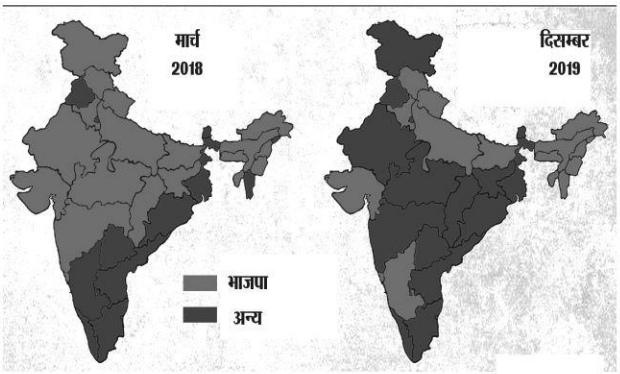

यूं तो कारण कई हैं - भाजपा ने स्थानीय जातिगत समीकरणों की अनदेखी की। 'स्थानीय बनाम बाहरी' की सोच को राज्य सरकार द्वारा लिए गए फैसलों ने और दृढ़ बनाया। जैसे, बरसों पुराने छोटा नागपुर अधिनियम में बदलाव के प्रयास किए गए। इनके माध्यम से संदेश दिया गया कि इससे विकास कार्यों के लिए जमीन का अवासिकरण आसान हो जाएगा। इसका राज्य में व्यापक विरोध हुआ और ये अधिनियम विधानसभा में रखने से पहले ही सरकार को अपने कदम पीछे खींचते हुए अधिनियम प्रक्रिया को स्थगित करना पड़ा, किन्तु इससे जन-मानस में यह संदेश तो प्रचारित हुआ ही कि राज्य सरकार आदिवासियों की जमीन छीनना चाहती है। दूसरा एक कारण पिछले पांच सालों में राज्य सरकार की नीतियों के खिलाफ समय-समय पर होने वाले विरोध प्रदर्शनों में 10,000 से अधिक आदिवासियों के विरूद्ध राजद्रोह का मुकदमा चलाया जाना भी था। यहां यह उल्लेखनीय है कि राज्य में आदिवासियों की आबादी करीब 26 फीसदी है और वह विधानसभा की 30 सीटों पर निर्णायक भूमिका में रहती आई है।

यदि भाजपा के लिए झारखण्ड चुनाव में संतोष करने जैसा कुछ है तो वह यह कि मत प्रतिशत के मामले में सबसे बड़े दल के रूप में उभरे प्रतिस्पर्धी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा(जेएमए) से बहुत आगे रही। इतना ही नहीं, वह अपने प्रतिस्पर्धी गठबंधन के तीनों दलों जेएमएम, कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल(राजद) को मिले कुल मत प्रतिशत के बिल्कुल करीब रही। भाजपा को 33.40 प्र.श. वोट मिला, जबकि प्रतिस्पर्धी गठबंधन को कुल 35.35 प्र.श. वोट मिला। जिनमें जेएमएम का 18.75 प्रति., कांग्रेस को 13.88 प्रति. और राजद का 2.75 वोट शमिल है। यानी भाजपा और गठबंधन को मिले वोटों में मात्र 1.9 प्रति. का अन्तर रहा है। हालांकि चुनावी राजनीति में 'एक और एक ग्यारह' का सिद्धांत चलता है। शायद यही वजह है कि तीनों दलों ने मिलकर बहुमत के जादुई आंकड़े को भी पार कर लिया। विधानसभा की 81 सीटों वाले इस राज्य में सरकार बनाने के लिए 41 सीटों की दरकार थी, जबकि जेएमएम(30), कांग्रेस(16) और राजद(1) के गठबंधन खाते में 47 सीटें जमा हो गई। भाजपा महज 25 सीटों पर अटक गई, हालांकि वह सबसे ज़्यादा सीटों वाली दूसरे नम्बर की पार्टी है।

कांग्रेस मुक्त भारत बनाने का भाजपा का अहंकार तिरोहित हो चला है। उसकी यह धारणा भी खण्डित हो चुकी है कि वह एक अजेय पार्टी है। यदि अब नहीं संभली तो दिल्ली तक का रास्ता आगे निरापद नहीं है।

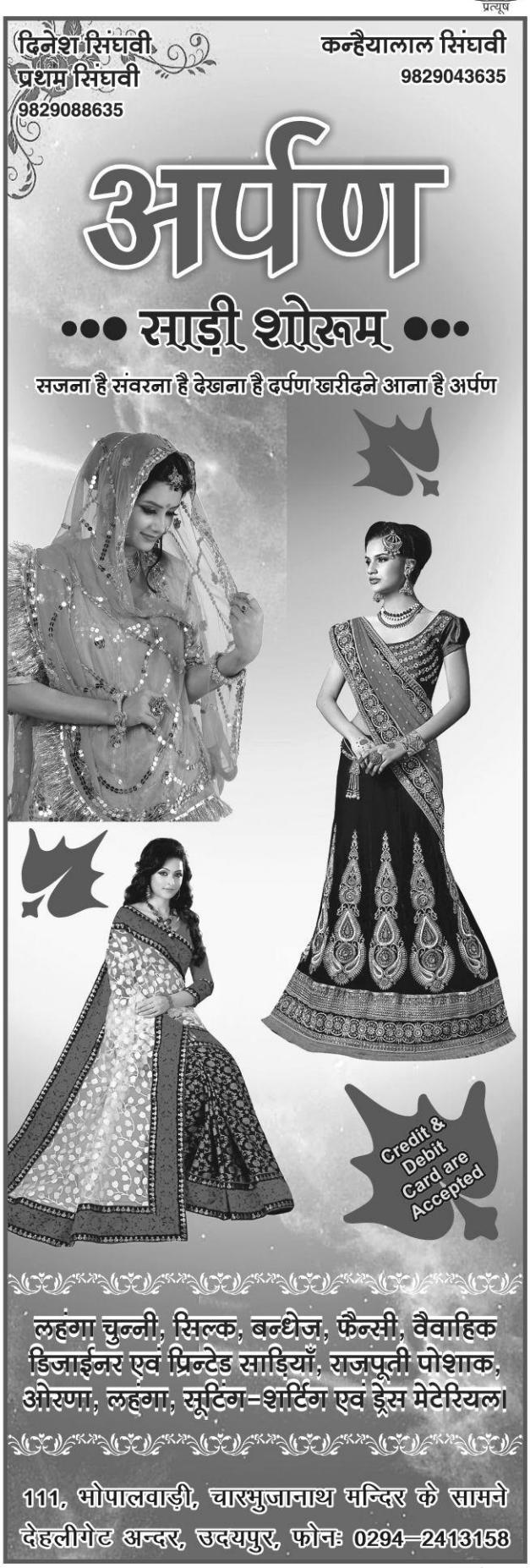

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ

तीनों सेनाओं की साझा कमान

✍ नंद किशोर शर्मा

पिछले वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' की नियुक्ति की घोषणा की थी। सेना प्रमुख पद से 31 दिसम्बर 2019 को सेवानिवृत्त होने के बाद बिपिन सिंह रावत ने 1 जनवरी, 2020 को देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ(सीडीएस) का पद संभाला। रावत के बाद मनोज मुकन्द नरवणे ने सेनाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। सीडीएस की नियुक्ति देश के रक्षा तंत्र में नई शुरूआत है और जनरल रावत की योग्यता और अनुभव सरकार की इस नई पहल को सार्थक करेंगे। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति की विगत 24 दिसम्बर को सहमति के साथ ही भारत भी सीडीएस के माध्यम से एक शक्ति सम्पन्न और एकीकृत सैन्य कमान वाला देश बन गया है। अन्य कई बड़े देशों में यह व्यवस्था बहुत पहले से है।

सीडीएस की नियुक्ति को राष्ट्रहित में एक बड़ा और महत्वपूर्ण फैसला माना जा रहा है। यह महज एक पद का सृजन ही नहीं है, यह प्रतिरक्षा मोर्चे को चुस्त-दुरूस्त करने का एक ज़रूरी उपाय भी है। तीनों सेनाओं के हित में होने से यह देशहित का भी बड़ा फैसला है। सीडीएस तीन भूमिकाओं राजनैतिक नेतृत्व के लिए एकल-बिन्दु सैन्य सलाहकार, सेनाध्यक्षों की समिति का स्थायी अध्यक्ष और गठित सैन्य मामलों के विभाग(डीएमए) का निर्वाह करेगा। सीडीएस की नियुक्ति और डीएमए के गठन से प्रतिरक्षा मोर्चे पर सुधारों को गति मिलेगी, रक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत पांचवे विभाग के रूप में परिकल्पित डीएमए रक्षामंत्री के प्रति उत्तरदायी होगा। यह मौजूदा रक्षा, रक्षा उत्पादन, पूर्व सैनिक कल्याण तथा अनुसंधान और विकास के वर्तमान विभागों के अतिरिक्त होगा। इन सभी विभागों के प्रमुख केन्द्र सरकार के सचिव के समकक्ष अधिकारी होते हैं। सीडीएस के पास भी लगभग उसी स्तर के अधिकार होंगे।

प्रथम सीडीएस जनरल रावत देश की सुरक्षा व्यवस्था और खासकर सेना के सामने आसन्न चुनौतियों से परिचित हैं। संसाधनों की कमी के बीच सैनिकों को जिम्मेदारियों के निर्वाह में कितनी और किस तरह की मुश्किलें पेश आती हैं, वे सब जानते हैं।

सीडीएस तीनों(जल, थल और वायु) सेनाओं से सम्बन्धित सभी मामलों के लिए रक्षा मंत्री के प्रमुख सैन्य सलाहकार के तौर पर ही काम नहीं करेंगे, बल्कि प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी के सदस्य भी होंगे। इसका यह अर्थ भी नहीं है कि तीनों सेना प्रमुखों के अधिकारों में कोई कटौती होगी। वे पहले की तरह रक्षामंत्री को रिपोर्ट करते रहेंगे।

किसी भी देश की सेना की ताकत सिर्फ इस बात में नहीं होती कि उसके पास कितने अत्याधुनिक हथियार हैं, बल्कि यह भी होती है कि व ऐसे हथियार बनाने में कितना सक्षम है। इस लिहाज से सरकार डीआरडीओ अर्थात रक्षा

अनुसंधान एवं विकास संगठन को लगातार समृद्ध करने का प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नया वर्ष भी डीआरडीओ के वैज्ञानिकों के बीच ही मनाया था। हालांकि अभी तक का अनुभव यह है कि अत्याधुनिक हथियारों के मामले में भारत को विदेशी कम्पनियों की ओर देखना पड़ता है। रक्षा मंत्रालय में सिविल सर्विस और वर्दीधारियों के बीच रक्षा प्रमुख(सीडीएस) को सैन्य साजोसामान की खरीद से सम्बन्धित शक्तियों के लिए पिछले कुछ समय से एक मूक शक्ति संघर्ष चल रहा था, जिसमें सैन्य पृष्ठभूमि वाली लॉबी इन शक्तियों को पाने में जी-जान से जुटी थी। रक्षा मंत्रालय के एक विभाग के प्रमुख के रूप में अब सीडीएस का सरकार में खासा प्रभाव होगा।

डीएमए में वह हर स्तर पर नागरिक और सैन्य अधिकारियों का उपयुक्त मिश्रण होगा। ऐसा होने से सेनाओं के लिए खरीद, प्रशिक्षण और स्टाफिंग में संयुक्तता को बढ़ावा मिलेगा।

थल सेना प्रमुख
जनरल
मनोज मुकुंद नरवणे

वायु सेना प्रमुख
एयरचीफ मार्शल राकेश
कुमार सिंह भदौरिया

नौ सेना प्रमुख
एडमिरल
करमवीर सिंह

संसाधनों के सर्वोत्कृष्ट उपयोग के लिए सैन्य कमानों का पुनर्गठन किया जा सकेगा और स्वदेशी उपकरणों के उपयोग को बढ़ावा भी मिलेगा। तीनों सेनाओं को हथियार उपलब्ध कराने में सीडीएस की भूमिका महत्वपूर्ण होगी, पर हथियार खरीद की वास्तविक भूमिका अभी रक्षा सचिव की अध्यक्षता वाले रक्षा विभाग के पास ही रहेगी। महत्वपूर्ण बात है तीनों सेनाओं में तालमेल की। करगिल संघर्ष के दौरान सेनाओं में समन्वय की कभी की बात सामने आई थी, जिससे काफी नुकसान उठाना पड़ा था। एक ऐसे समय में जबकि भारत के लिए पड़ौसी देशों की ओर से चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं, तब तीनों सेनाओं में तालमेल के अभाव की कोई भी गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। उम्मीद है कि सीडीएस पद के सृजन से तीनों सेनाओं में संवाद और समन्वय बेहतर होगा और समस्याओं का समाधान भी त्वरित होगा। मौजूदा समय में सेनाओं की कतार लम्बी होना जितना महत्वपूर्ण नहीं है, उतना महत्वपूर्ण यह है कि वह कितनी सक्षम है। उम्मीद यह भी है कि सीडीएस की नियुक्ति से तीनों सेनाओं की आवश्यकता और जवानों के हितों की अनदेखी भी नहीं होगी।

चुनौतियों से वाकिफ

16 मार्च, 1958 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में पैदा हुए जनरल बिपिन सिंह रावत के पिता लक्ष्मण सिंह रावत भी सेना में रहे हैं। वे लेफ्टिनेंट जनरल पद से रिटायर हुए। स्कूली शिक्षा के बाद बिपिन रावत ने इंडियन मिलिट्री अकेडमी, देहरादून और फिर डिफेंस स्टाफ कॉलेज में प्रवेश लिया। उन्हें 16 दिसम्बर, 1978 को 11 गोरखा रायफल्स की 5वीं बटालियन में कमीशन मिला। उनके पिता भी इसी बटालियन का हिस्सा रहे थे। उनकी पहली पोस्टिंग मिजोरम में हुई और उन्होंने इस बटालियन का नेतृत्व भी किया। उनकी बटालियन को उत्तर पूर्व की सर्वश्रेष्ठ बटालियन चुना गया। लेकिन करीब 42 साल लम्बे करियर में उनकी कामयाबी का सबसे बड़ा राज यह है कि वे चीजों को एकपक्षीय नजरिये से नहीं देखते। सेना प्रमुख रहते हुए वे सैन्य अधिकारियों को मिलने वाली सुविधाओं पर आपत्ति जता चुके हैं। वे सेना और आम लोगों के बीच मेलजोल के भी पक्षधर तथा सेना को मिलने वाले विशेषाधिकारी के खिलाफ हैं।

अपने करियर में जनरल रावत पूर्वी क्षेत्र में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल, कश्मीर घाटी के इंफेंट्री डिवीजन में राष्ट्रीय राइफल्स सेक्टर के साथ डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड के मुखिया रह चुके हैं। जनरल रावत को अशांत इलाकों में काम करने का लम्बा अनुभव है। मिलिट्री फोर्स के पुनर्गठन, पश्चिमी क्षेत्र में आतंकवाद और पूर्वोत्तर में जारी संघर्ष को उन्होंने करीब से देखा है।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)
गणतंत्र दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं
JKTYRE
& INDUSTRIES LTD.
MEMBER J.K. ORGANISATION

तीसरे विश्वयुद्ध की आहट

मध्य पूर्व में अशांति और विवाद का शमन ज़रूरी

आर्थिक सुस्ती के बीच भारत के लिए भी नई चुनौती

✍ विष्णु शर्मा हितैषी

ईरानी सेना के कमाण्डर जनरल कासिम सुलेमानी की मौत के बाद पश्चिम एशिया में एक बार फिर युद्ध के बादल मंडराने लगे हैं। न केवल ईरान व अमेरिका समर्थक देशों की सेनाएं अलर्ट पर हैं, बल्कि सऊदी अरब और इज़राइल ने भी अपनी सीमाओं पर मिसाइलें तैनात कर सेना को तैयार रहने का आदेश दिया है। ईरान सुलेमानी की मौत का बदला लेने का ऐलान कर चुका है। अपने दूसरे शक्तिशाली नेता की मौत का बदला लेने के ईरान के इस कड़े संकल्प और इसके जवाब में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की यह धमकी कि 'वे ईरान के 52 सांस्कृतिक ठिकानों को नेस्तनाबूद कर डालेंगे', ने आग में घी डालने का काम किया है। कोई नहीं जानता कि कब क्या हो जाए। इस वक्त ट्रंप अपने खिलाफ महाभियोग सहित जिन दूसरी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं, और लोकप्रियता का ग्राफ जिस तेजी से नीचे आ रहा है, ऐसी स्थिति में वे शायद देश-दुनिया का ध्यान भटकाने के लिए ईरान को निशाना बनाने का मौका अपने लिए बेहतर मान बैठे हैं।

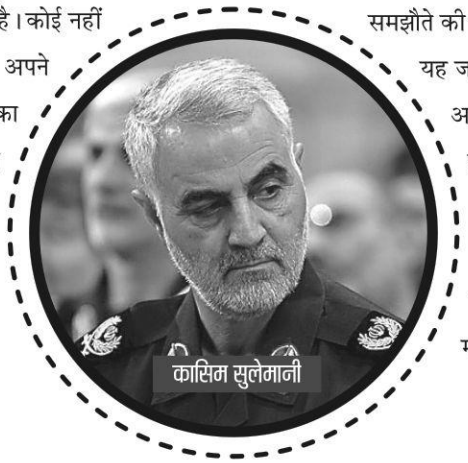

कासिम सुलेमानी

ईरान के शीर्ष कमाण्डर कासिम सुलेमानी की अमेरिकी हमले में मौत के बाद दुनिया में हर कोई इसी सवाल का जवाब ढूंढने में लगा है कि 'क्या हालात तीसरे विश्वयुद्ध की तरफ बढ़ रहे हैं?' ईरान ने बेशक बदला लेने की बात कही है, लेकिन वह आंखें मूंद कर कदम भी नहीं बढ़ा रहा। ईरान ने 6 जनवरी को यह घोषणा की कि वह 2015 का परमाणु समझौता मानने को बाध्य नहीं है, तो कोई हैरत भी नहीं हुई। यूरोपीय देशों ने ईरान से यह अनुरोध ज़रूर किया है कि वह अपने इस फैसले पर फिर से विचार करे और परमाणु समझौते का पालन बरकरार रखे, लेकिन इन सभी को यह भी पता है कि ईरान अब इस समझौते की पाबंदियों को मानने वाला नहीं है। हालांकि उसने यह जरूर स्पष्ट कर दिया है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु अप्रसार के विरूद्ध नहीं है दरअसल हैरत तो तब होती, जब इस तनाव के बाद भी वह समझौते को मानने की बात करता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह जानता था कि परमाणु समझौते को तोड़ने का बड़ा आरोप किसी भी सूरत में उस पर मढ़ा ही नहीं जा सकता, क्योंकि इस समझौते में

ट्रम्प और खुमैनी

प्रमुख भूमिका निभाने वाला अमेरिका दो वर्ष पूर्व ही इससे खुद को बाहर चुका था। समझौते से अलग होने के साथ ही राष्ट्रपति ट्रम्प ने ईरान पर और भी कई पाबंदिया थोप दीं, जिसे हम उनकी 'ईरान नीति' कह सकते हैं। दोनों देशों में परस्पर विरोध का यह सिलसिला यहीं से शुरू हुआ जो 10 जनवरी को अमरीकी ड्रोन हमले में ईरानी सेना के शीर्ष कमाण्डर कासिम सुलेमानी की हत्या तक पहुंच गया। जिसका ईरान में व्यापक विरोध हुआ। दोनों देशों के मध्य शांति और सुलह की 2015 में परमाणु समझौते के साथ जो नींव तैयार हुई थी, वह अब पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है और दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की आशंका से घिर गई है।

अमेरिका और ईरान के बीच विवाद की शुरूआत नई नहीं है। इनके बीच तनाव की शुरूआत 1953 में तब हुई जब अमेरिकी खुफिया एजेन्सी सीआईए ने ब्रिटेन की एमआई-6 के साथ मिलकर ईरान में तख्तापलट करवाया था। दोनों खुफिया एजेंसियों ने अपने फायदे के लिए ईरान के निर्वाचित प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसादेग को सत्ता से बेदखल कर ईरान के शाह रजा पहलवी को गद्दी पर आसीन कर दिया। इसके बाद अमेरिका और ब्रिटेन के उद्योगपतियों ने लम्बे समय तक ईरानी तेल का व्यापार कर खूब लाभ अर्जित किया। जबकि मोहम्मद मोसोदेग तेल कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण करना चाहते थे। किसी विदेशी नेता को सामान्य हालातों में अपदस्थ करने का काम अमेरिका ने पहली बार ईरान में ही किया था।

1979 की ईरानी क्रांति

1953 में ईरान में अमेरिका ने जिस तरह से तख्तापलट किया उसी का नतीजा 1979 की ईरानी क्रांति थी। अमेरिका ने 1979 में ईरान के शाह रजा पहलवी को लोकतंत्र के नाम पर सत्ता से हटाकर अयतोल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी को सत्ता हासिल करने में अप्रत्यक्ष रूप से मदद की। 1 फरवरी 1979 अयतोल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी ईरान लौटे और सत्ता संभाली। 1979 में ईरान में इस्लामिक क्रांति से पहले खुमैनी तुर्की, इराक और पेरिस में निर्वासित जीवन जी रहे थे। खुमैनी, शाह पहलवी के नेतृत्व में ईरान के पश्चिमीकरण और अमेरिका पर बढ़ती निर्भरता के लिए उन्हें निशाने पर लेते रहे थे। सत्ता में आने के बाद उग्र क्रांतिकारी खुमैनी की उदारता में अचानक से परिवर्तन आया। उन्होंने खुद को वामपंथी आंदोलनों से अलग कर लिया और विरोधी आवाजों को दबाना शुरू कर दिया।

दूतावास संकट

ईरान और अमेरिका के राजनयिक संबंध खत्म होने के बाद 1979 में तेहरान में ईरानी छात्रों के एक समूह ने अमेरिकी दूतावास को अपने कब्जे में लेकर 52 अमेरिकी नागरिकों को एक साल से ज्यादा समय तक बंधक बनाकर रखा था। कहा तो यह भी जाता है कि इस घटना को खुमैनी का मौन समर्थन प्राप्त था। इन सबके बीच सद्दाम हुसैन ने 1980 में ईरान पर हमला बोल दिया। ईरान और इराक के बीच आठ सालों तक युद्ध चला। इसमें लगभग पांच लाख ईरानी और इराकी सैनिक मारे गए थे। इस युद्ध में अमेरिका सद्दाम हुसैन के साथ था। यहां तक कि सोवियत यूनियन ने भी सद्दाम हुसैन की मदद की।

2015 का परमाणु समझौता

अमेरिका और ईरान के संबंधों में जब कड़वाहट कुछ कम होती दिखी तब तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 2015 में ज्वॉइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन बनाया था। इसके बाद ईरान के साथ अमेरिका ने परमाणु समझौता किया, जिसमें ईरान ने परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने की बात कही। लेकिन ट्रंप ने सत्ता में आते ही एक तरफा फैसला लेते हुए इस समझौते को रद्द कर दिया। साथ ही ईरान पर कई नए प्रतिबंध भी लगा दिए गए। ट्रंप ने न केवल ईरान पर प्रतिबंध लगाए बल्कि दुनिया के देशों को धमकी देते हुए कहा कि जो भी इस देश के साथ व्यापार करेगा वो अमेरिका से कारोबारी संबंध नहीं रख पाएगा।

महाशक्तियां नाखुश

ईरान के खिलाफ अमेरिका के इस कदम के विरोध में रूस, चीन जैसी महाशक्तियां खुल कर आ गई हैं। फ्रांस और जर्मनी जैसे देश भी ट्रंप के इस कदम से खुश नहीं हैं। दूसरी ओर, ब्रिटेन ने तो अमेरिका का साथ देते हुए अपना एक युद्ध पोत खाड़ी की ओर भेज भी दिया है। ऐसे में अमेरिका के समर्थकों और विरोधियों की खेमेबंदी कहीं ज्यादा खुल कर सामने आने लगी है। किन्तु अमेरिका के लिए अब ईरान ही नहीं, इराक भी गले की फांस बन गया है। विदेशी फौज की मौजूदगी खत्म करने को लेकर इराकी संसद ने हाल में जो प्रस्ताव पास किया है, उससे भी अमेरिका की नींद उड़ गई है। बदले में अमेरिका ने इराक पर अभूतपूर्व प्रतिबंध लगाने की धमकी दी है। इराक की बौखलाहट इसलिए ज्यादा है कि हमले में उसके भी शीर्ष सैन्य अधिकारी मारे गए हैं और यह हमला उसकी जमीन पर हुआ है। इराक में अमेरिकी का सबसे बड़ा सैनिक अड्डा है, जहां से अमेरिका ईरान और सीरिया के खिलाफ जंग की रणनीति बनाए हुए है। ऐसे में जोखिम भरे कदम उठाना अमेरिका के लिए भी कम महंगा नहीं पड़ने वाला है।

तेज बाजार प्रभावित

अमेरिका-ईरान विवाद का पहला असर दुनिया के तेल बाजारों पर पड़ना शुरू हो गया है। जो देश इराक और ईरान से तेल खरीदते हैं, उनके सामने तो संकट और ज्यादा गहरा सकता है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। हालांकि भारत काफी समय से अमेरिकी दबाव में ईरान और वेनेजुएला से तेल नहीं खरीद रहा है। इसलिए इराक पर निर्भरता काफी ज्यादा है। ऐसे में अगर इराक भी अमेरिका के साथ कोई टकराव लेता है तो तेल खरीदार देशों की हवा खराब होते देर नहीं लगेगी। सुलेमानी की हत्या के फौरन बाद वैश्विक बाजार में कच्चे तेल के दाम चढ़ने लगे। भारत की तेल कंपनियां पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ा रही हैं। डीजल-पेट्रोल महंगा होने से महंगाई और बढ़ेगी। यह वक्त भारत की कूटनीतिक परीक्षा का भी है कि वह अमेरिका का साथ देता है, या ईरान के पक्ष में खड़ा होता है। हालांकि भारत किसी एक के पक्ष में खड़ा न होकर इस बात का प्रयत्न करेगा कि दोनों देशों में सम्बन्ध फिर से सामान्य हों। भारत के हित दोनों से जुड़े हुए हैं।

कोई बड़ा युद्ध होगा या नहीं, अभी नहीं कहा जा सकता, अगर ऐसा हुआ, तो बारूद के ढेर पर बैठी दुनिया में चिनगारियों की संख्या जरूरत बढ़ जाएगी। अमेरिका से कहीं ज्यादा इसकी चिंता पश्चिम एशिया में उसके बड़े सहयोगी इजरायल को है। बहुत दूर अमेरिका पर निशाना साधने के मुकाबले ईरान के लिए इजरायल पर निशाना साधना ज्यादा आसान होगा। इस मामले में सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि शांति की कोई पहल कहीं नजर नहीं आ रही। राजनयिक स्तर पर वे चैनल कहीं सक्रिय नहीं दिख रहे, जो दोनों देशों को एक साथ बिठा सकें।

भारत चुप न रहे

भारत के सामने मुश्किल भरे हालात हैं। यदि तनाव बढ़ता है तो क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ेगी वहां हमारे व्यापक हितों को ठोस पहुंचेगी। भारत को क्षेत्र में शांति और सुरक्षा का माहौल सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी राजनयिक भूमिका निभाने की अपनी ताकत का इस्तेमाल करने से पीछे नहीं रहना चाहिए। उसे अमेरिका के अधिकतम दबाव को नकारना ही होगा।

ईरान की अहमियत

भारत और अमेरिका के बीच विदेश व रक्षा मंत्रियों की बैठक में जब ईरान के चाबहार पोर्ट को लेकर भारत को छूट देने पर अमेरिका तैयार हुआ था। इससे माना गया था कि वह ईरान व भारत के रिश्तों को लेकर बहुत ज्यादा तवज्जो नहीं दे रहा। वैसे भारत ने ईरान से तेल खरीदना पूरी तरह से बंद कर दिया है। इसके बावजूद कई वजहों से भारत के लिए ईरान की अहमियत है। इसमें सबसे बड़ा कारण यह है अफगानिस्तान में पाकिस्तान के प्रभाव को रोकने के लिए उसकी जरूरत रहेगी।

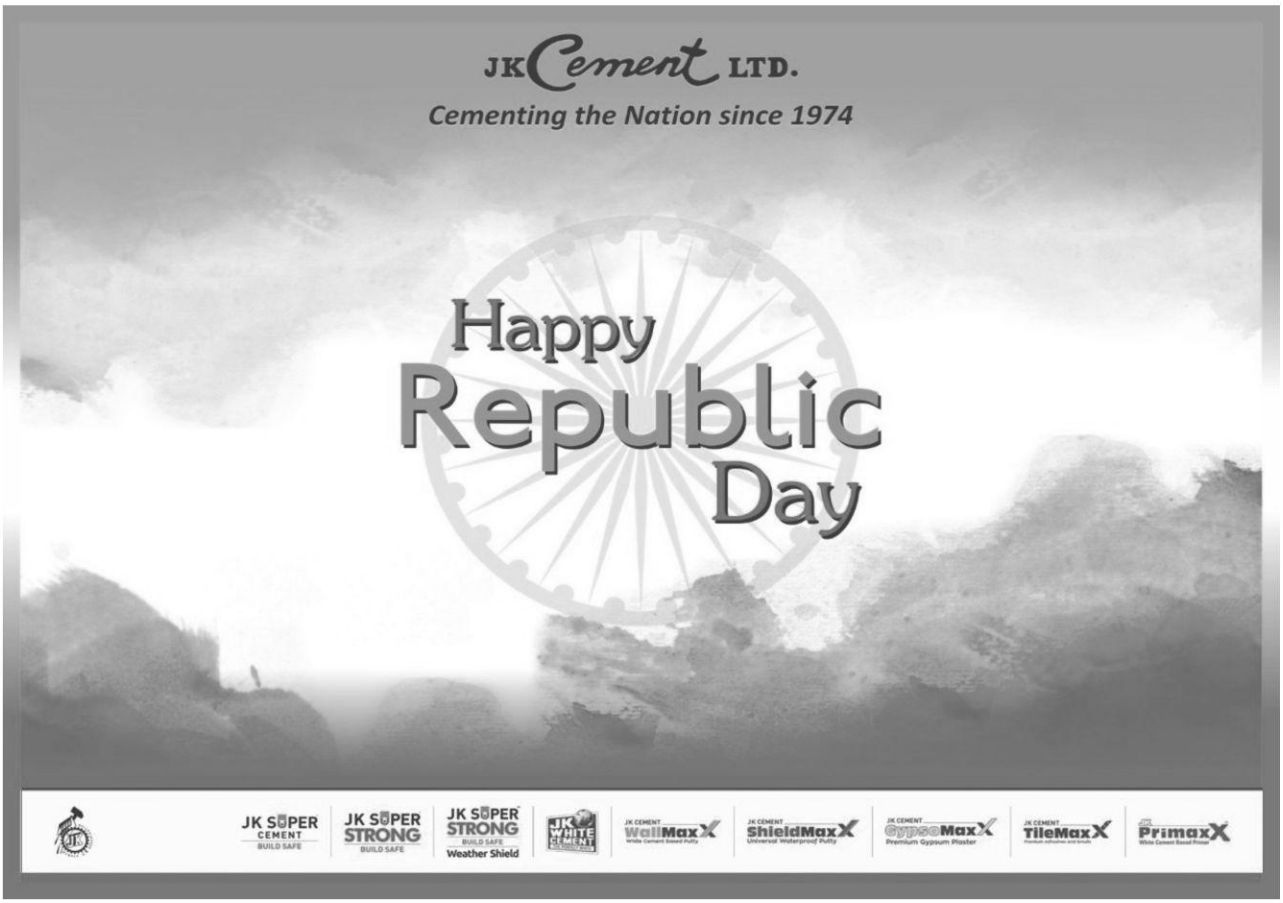

बच्चों की मौत का जिम्मेदार कौन?

यह प्रश्न राजस्थान में हुई बच्चों की मौतों का ही नहीं, ऐसे ही हालात उत्तर भारत के बिहार, गुजरात और उत्तरप्रदेश के भी हैं।

'स्वस्थ जीवन' हर बच्चे का पहला अधिकार है। मानवाधिकारों को लेकर दुनियाभर में तमाम मंचों-मोर्चो पर अपनी सहभागिता की मोहर लगाता भारत यह क्यों भूल रहा है कि बुनियादी अधिकारों के संरक्षण की सबसे अधिक जरूरत उन बच्चों को है, जो अपने अधिकारों के लिए आवाज़ नहीं उठा सकते।

✍ उमेश शर्मा

पिछले दिनों राजस्थान के कोटा, जोधपुर, बीकानेर आदि जिलों के सरकारी अस्पतालों में बड़ी संख्या में बच्चों की मौत के सिलसिले ने प्रश्न किया है कि हम इतने असंवेदनशील कैसे हो सकते हैं? सरकार के मेडिकल महकमे से नाराज़ होकर ही राजस्थान हाईकोर्ट ने भी उससे यह प्रश्न किया कि सरकारी अस्पतालों की चौखट के भीतर रहते हुए भी नवजात शिशु दम क्यों तोड़ रहे हैं? यह प्रश्न राजस्थान में हुई बच्चों की मौतों का ही नहीं, ऐसे ही हालात उत्तर भारत के बिहार, गुजरात और उत्तरप्रदेश जैसे बड़े राज्यों के भी हैं। बच्चे ही क्यों, अस्पतालों में तो किसी भी ऐसे रोगी की मौत नहीं होनी चाहिए, जिसे बेहतर चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता से बचाया जा सकता है। राजस्थान में एक के बाद एक कर 134 से अधिक नवजात बच्चों की मौत हुई, वैसी ही घटना विकास में सबसे आगे रहने का दावा करने वाले गुजरात राज्य के राजकोट के अस्पताल में भी घटी।

राजस्थान की औद्योगिक नगरी कोटा में जेके लोन मातृ एवं शिशु चिकित्सालय एवं न्यू मेडिकल कॉलेज नाम के एक सरकारी अस्पताल में डेढ़-दो माह के भीतर सवा सौ से अधिक बच्चे इलाज के दौरान काल के गाल में समा गए और अस्पताल माताओं की चीखों से गूंजता रहा। ममता की गोद सूनी करने का यह पाप किस पर मढ़ा जाए? दरअसल जन्म के तत्काल बाद बच्चों की सेहत को लेकर जो सुरक्षा और सतर्कता उपाय होने चाहिए वे या तो अस्पतालों में नहीं हैं और यदि हैं तो उनकी अनदेखी ही की जा रही है। संक्रमण के चलते बच्चे दुनिया में आंख खोलने के साथ ही एक-एक कर फिर उसी दुनिया में चले गए जहां से ईश्वर ने उन्हें कुछ करने के निमित्त भेजा था। राजस्थान हो या और कोई प्रदेश, अस्पतालों में भ्रष्टाचार और कुप्रबंध साल-दर-साल नवजातों की मौत का कारण बनता जा रहा है। बच्चों के जीवन के प्रति बरती जाने वाली घोर असंवेदनशीलता की फेहरिस्त बहुत लम्बी है। साल 2017 में गोरखपुर के मेडिकल कॉलेज में ऑक्सीजन की कमी से साठ से ज्यादा बच्चों की मौत, इससे पूर्व अगस्त 2013 में कोलकाता के बी.सी. राय

चिल्ड्रन हॉस्पिटल में सवा सौ बच्चों की जान चले जाना या फिर पिछले ही वर्ष बिहार में चमकी बुखार से हुई बच्चों की मौत यह बताने के लिए काफी है कि हम घटनाओं से सबक लेने को तैयार नहीं हैं। जब हम बच्चों के जीवित रहने के अधिकारों का ही संरक्षण नहीं कर पाते तो हमें विकास के बड़े-बड़े दावों का दंभ भरते हुए शर्म से गड़ भी जाना चाहिए। बच्चे के जन्म के साथ ही जीवन के लिए उसका संघर्ष प्रारंभ हो जाता है और यह कोई दो-पांच दिन या महिनों तक ही नहीं कम से कम पांच वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने तक तो जारी रहता ही है।

बीमारी की चपेट में आए बहुत सारे बच्चे शहरी अस्पतालों में उन ग्रामीण या दूरदराज के इलाकों से आते हैं, जहां प्राथमिक स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं का ढांचा बेहद कमजोर है। जाहिर है, वहां समय पर और उचित इलाज न मिलने के बाद जब वे शहर के बड़े अस्पतालों तक पहुंचते हैं, तो उनकी स्थिति पहले से ही बिगड़ी होती है और यहां आने के बाद कुप्रबंधन और डॉक्टरों की लापरवाही हालत को और ज़्यादा नाजुक बना देती है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अपनी तीसरी पारी में 'निरोगी राजस्थान' अभियान के तहत राज्य में लोगों के स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं, पिछले दो कार्यकालों में उन्होंने नि:शुल्क दवा योजना को लागू किया तो अब उन्होंने कई तरह की जांचों को भी मुफ्त कर दिया है।

उनकी संवेदनशीलता पर उंगली नहीं उठाई जा सकती किन्तु जैसा उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने कहा कि बच्चों की मौतों की जिम्मेदारी किसी न किसी को तो लेनी पड़ेगी, बिना जिम्मेदारी तय किए यह लापरवाही आगे भी चलती रहेगी। अतएव ज़रूरत इस बात की है कि अस्पतालों के प्रबंधन और प्रशासन पर कड़ी निगाह रखने के साथ ही उन्हें ज़रूरत के सभी आधुनिक उपकरणों से लैस किया जाए। डॉक्टरों ने आजकल 'हड़ताल' जैसा हथियार हाथ में ले लिया है, वे अपनी किसी भी गलती और लापरवाही को मानने के लिए तैयार नहीं दिखते। ऐसे में राज्य सरकार को कड़ा रूख अख्तियार करते हुए उन डॉक्टरों को अस्पताल से बाहर का रास्ता दिखाना होगा, जो रोगियों के साथ आए दिन दुर्व्यवहार ही नहीं करते बल्कि अपनी प्राईवेट कमाई की खनक में वार्ड में दम तोड़ते मरीजों की चीख भी उन्हें सुनाई नहीं पड़ती।

बीमारी की चपेट में आए बहुत सारे बच्चे शहरी अस्पतालों में उन ग्रामीण या दूरदराज के इलाकों से आते हैं, जहां प्राथमिक स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं का ढांचा बेहद लचर है। जाहिर है, वहां समय पर और उचित इलाज न मिलने के बाद जब वे शहर के बड़े अस्पतालों तक पहुंचते हैं, तो उनकी स्थिति पहले से ही बिगड़ी होती है और यहां आने के बाद कुप्रबंधन और डॉक्टरों की लापरवाही हालत को और ज़्यादा नाजुक बना देती है।

सरकारी दिशा-निर्देशों के अनुसार हर अस्पताल में पीएचसीएस-एनबीएसयू और एसएनएससीयूए उपलब्ध होने जरूरी हैं। पीएचसीएस का अर्थ है कि जन्म के समय या प्रसव के लिए आई महिला के बच्चे का बिना किसी परेशानी के प्रसव करना, जबकि थोड़ी बहुत परेशानियों के लिए एनबीएसयू(नवजात स्थिरीकरण इकाई) जहां शिशु की हालत को स्थिर किया जा सकता है, परन्तु हकीकत में ये सुविधाएं सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध ही नहीं हैं।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट बताती है कि भारत में कुपोषण, उचित इलाज और देखरेख के अभाव में करीब आठ लाख नवजात शिशुओं की मौत हर साल हो जाती है। बच्चों की निरन्तर होती मौतों का कारण सिर्फ सरकारी अस्पतालों की बदतर स्थिति ही नहीं, बल्कि अन्य कारण भी हो सकते हैं। जिनका फिल्ड में काम करने वाली सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग को पता लगाकर उन हालातों को बदलने की दिशा में काम करना होगा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि बच्चे वोट बैंक का हिस्सा नहीं होते, इसलिए देश के नीति-निर्धारकों की दृष्टि में उनका कोई महत्व नहीं है। किसी भी राजनीतिक दल और कल्याणकारी सरकार के लिए ऐसा रवैया असंवेदनशीलता की पराकाष्ठ ही कहा जाएगा।

सिंघम का शतक

✍ जगदीश सालवी

बॉलीवुड अभिनेता अजय देवगन उर्फ सिंघम भी शतकवीर बन गए हैं। इन दिनों वे अपनी नवप्रदर्शित ऐतिहासिक फिल्म 'तानाजी : द अनसंग वॉरियर' को लेकर सुर्खियों में हैं। यह फिल्म समय की धूल में दब गए इतिहास के एक पन्ने को झाड़कर देश और दुनिया के सामने लाने की एक अच्छी कोशिश करती दिखाई पड़ती है। वे इस फिल्म के अभिनेता होने के साथ निर्माता भी हैं। 'तानाजी' के प्रदर्शन के साथ ही उन्होंने फिल्मों में अभिनय का 'शतक' भी पूरा कर लिया है। इस फिल्म में लम्बे अन्तराल से अभिनय करके काजोल ने भी पति के 'फिल्म शतक' को और भी खास बना दिया है। वे इसे एक यादगार फिल्म बताती हैं। जिसका निर्माण 3डी में हुआ है।

उल्लेखनीय है कि यह फिल्म महान मराठा योद्धा (1670) देशभक्त सूबेदार 'तानाजी मालसुरे' के जीवन पर आधारित है, जिन्होंने देश और स्वाभिमान की रक्षा की खातिर अपने प्राणों की आहूति दे दी। देवगन का इस फिल्म में काम बहुत बढ़िया है। वे इस फिल्म के साथ ही फिल्मों में अभिनय के शतक से खुश तो हैं, किन्तु बड़ी संजीदगी और विनम्रता से यह भी कहते हैं कि 'समय कितना जल्दी भाग रहा है, ऐसा लगता है जैसे कुछ समय पहले ही मैंने अपनी पहली फिल्म 'फूल और कांटे' की थी। सच कहूं तो मैंने इस बारे में कभी सोचा नहीं था कि मैं सौ फिल्मों तक पहुंच जाउंगा। मैंने जितनी मेहनत पिछली 99 फिल्मों में की थी, उसी शिद्दत के साथ 'तानाजी' को पूर्ण किया और आगे की फिल्में में भी इससे ज्यादा मेहनत के साथ करूंगा। मुझे फिल्मों से प्यार तो है ही, दर्शकों का स्नेह और आशीर्वाद भी मुझे भरपूर मिला है।'

अजय देवगन (जन्म 2 अप्रेल, 1969 दिल्ली) ने भारतीय हिन्दी फिल्म उद्योग में अपना सफर 1991 में 'फूल और कांटे' फिल्म से आरंभ किया। 1999 में उन्हें महेश भट्ट निर्देशित फिल्म 'जख्म' और 2002 में राजकुमार संतोषी निर्देशित फिल्म 'द लेजेंड ऑफ भगत सिंह' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। मूलत: पंजाब के उनके पिता वीरू देवगन फिल्मों के प्रसिद्ध स्टंटमैंन थे। मां वीणा देवगन ने भी कुछ फिल्मों का निर्माण किया। जिस साल उन्हें पहली बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिला उसी साल ये अपने जमाने की मशहूर अदाकार शोभना समर्थ की नातिन और तनूजा (नूतन की छोटी बहिन) की बेटी काजोल से परिणय सूत्र में बंध गए। उनके न्यासा(16) व युग(9) पुत्री व पुत्र हैं।

SHREYA GIRLS HOSTELS

GIRLS HOSTEL IN THE HEART OF THE CITY

Homely Environment

Manpreet Singh Khanuja

Genreal Secetary
Prayavaran Sanrakshan Prakosht
Rajasthan Pradesh Congress Committee

Member
Rotary Club, Udaipur
Mob. 94141-66377

Facilities Available Here

- Well Constructed Building with all Facilities and Amenities Like Wardrobes, Tables, Attach lat-Bath, R.O. Water Invertor, Freeze, Hot Water Solar System, T.V.
- Hostel Warden and Guards to watch out and prevent unauthorized entry.
- Near to all major universities and Colleges
- Complete Package for lodging and Boarding Available
- Near to all Type of Transport Facility

Affordable Package

PART-1
9-B, Sikh Colony, Nr. Gurudwara,
Opp. M.B. College Road
Udaipur (Raj.) Mob.; 8058793359

PART-2
University Road, Near Agarwal Sadan
Behind Dev Dungari Temple, Udaipur
Office : 9887141777

सब गुणों का संगम हैं शिव

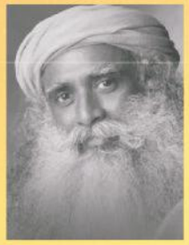

✍ सद्गुरु जग्गी वासुदेव

शिव 'विरुद्धों का सामंजस्य' हैं। उनके पास सबके लिए स्थान है, चाहे वे परस्पर विरोधी गुणों के ही क्यों न हों! शिव के गले का सर्प व कार्तिकेय का वाहन गरुड़, नंदी व मां पार्वती का वाहन सिंह, सब एक साथ बिना बैर-भाव के रहते हैं। यह शिव-परिवार में ही संभव है।

जिस विशाल खालीपन को हम शिव कहते हैं, वह असीम है, शाश्वत है। कन चूंकि इन्सान का बोध रूप और आकार तक सीमित होता है, इसलिए हमारी संस्कृति में शिव के लिए बहुत तरह के रूपों की कल्पना की गई। गूढ़ और समझ से परे, ईश्वर, मंगलकारी, शंभो, बहुत नादान, भोले, वेद, शास्त्र व तंत्र के महान गुरु, दक्षिणामूर्ति, आसानी से माफ कर देने वाले, आशुतोष, स्रष्टा के ही रक्त से रंगे, भैरव, संपूर्ण रूप से स्थिर, अचलेश्वर सबसे जादुई नर्तक, नटराज आदि। यानी जीवन के जितने पहलू हैं, उतने ही पहलू शिव के बताए गए हैं।

आमतौर पर दुनिया के ज्यादातर हिस्सों में, लोग जिसे ईश्वरीय मानते हैं, उसे हमेशा अच्छा दर्शाया जाता है। पर अगर आप शिव पुराण को पढ़ें, तो शिव की पहचान अच्छे या बुरे के रूप में नहीं कर सकते। वह सब कुछ हैं - वह सबसे बदसूरत हैं और सबसे खूबसूरत भी हैं। वह सबसे अच्छे और सबसे बुरे हैं। शिव की शख्सियत जीवन के पूरी तरह विरोधी पहलुओं से बनी है। उन्हें सभी गुणों का एक जटिल संगम माना गया है, क्योंकि अगर आप इस एक प्राणी को स्वीकार कर सकते हैं, तो समझ लीजिए आप जीवन को जान चुके हैं। जीवन के साथ हमारा सारा संघर्ष यही है कि हम हमेशा यह चुनने की कोशिश करते हैं कि क्या सुंदर है और क्या नहीं, क्या अच्छा है और क्या बुरा। लेकिन अगर आप इस एक शख्स को, जो जीवन की हर चीज का एक जटिल संगम है, स्वीकार कर सकते हैं, तो आपको किसी चीज से कोई समस्या नहीं होगी।

योग संस्कृति में शिव को आदि-गुरु और आदि-योगी माना जाता है। हिमालय के बहुत ऊंचाई वाले इलाकों में एक योगी प्रकट हुए। किसी को पता नहीं कि वे कहां से आए थे। किसी को उनके अतीत का पता नहीं था। लोग बस उनका तेजस्वी रूप और भव्य मौजूदगी को देख कर उनके इर्द-गिर्द जमा हो गए। लोगों को समझ नहीं आ रहा था कि वे उनसे क्या उम्मीदें रखें। वह बिना कुछ कहे, बिना कुछ बोले, बिना हिले-डुले बस वहां बैठे रहे। दिन, सप्ताह, महीने गुजर गए, वह बस वहां बैठे रहे। फिर आम लोग अपनी दिलचस्पी खोकर चले गए। केवल सात लोग वहां लगातार बैठे रहे जिन्हें, आज सप्तऋषि कहा जाता है। ये सात ऋषि शिव की शिक्षा के सात आयामों को दुनिया के अलग-अलग कोनों तक ले जाने के साधन बने।

जीवन की गहन समझ से ही हम उस ध्वनि पर पहुंचे हैं, जिसे शिव कहते हैं। हम जानते हैं कि 'शि-व' ध्वनियां चमत्कारी चीजें कर सकती हैं। सिर्फ एक उच्चारण आपके अंदर बहुत शक्तिशाली रूप में विस्फोट कर सकता है।

जीवन की बहुत गहन समझ से ही हम उस ध्वनि पर पहुंचे हैं, जिसे हम शिव कहते हैं। हम जानते हैं कि 'शि-व' ध्वनियां आपके लिए चमत्कारी चीजें कर सकती हैं। अगर आप पर्याप्त ग्रहणशील हैं, तो यह ध्वनि विस्फोटक हो सकती है। सिर्फ एक उच्चारण आपके अंदर बहुत शक्तिशाली रूप में विस्फोट कर सकता है। इसमें इतनी शक्ति है। यह ऐसा विज्ञान है, जिसे अपने भीतर बहुत गहन अनुभव से समझा गया है। हमने बहुत गहराई में इसे देखा है।

'शिव' में 'शि' का मूल अर्थ है 'शक्ति या ऊर्जा'। भारतीय जीवनशैली में हमने हमेशा स्त्रीत्व को शक्ति का प्रतीक माना है। अंग्रेजी भाषा में भी स्त्रीत्व के लिए यही शब्द 'शी' मिलता है। 'शि' का मूल अर्थ शक्ति या ऊर्जा है। लेकिन अगर आप बहुत ज्यादा 'शि' करेंगे, तो यह आपको असंतुलित कर देगा। इसलिए उसे मंद करने और संतुलन बनाए रखने के लिए इस मंत्र में 'व' जोड़ा गया है। 'व', वाम से आया है, जिसका मतलब है, प्रवीणता या अधिकार।

'शि-व' मंत्र में, एक उसे ऊर्जा देता है और दूसरा उसे संतुलित करता है या उसे काबू करता है। दिशाहीन ऊर्जा किसी काम की नहीं होती, वह विनाशकारी हो सकती है। इसलिए जब हम 'शिव' कहते हैं, तो हम उस ऊर्जा को एक खास रूप में, एक खास दिशा में प्रेरित करने की बात करते हैं। जब आप 'शिव' कहते हैं, तो इसका धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। आज दुनिया धर्म के आधार पर बंटी हुई है। इसकी वजह से, जब आप कुछ बोलते हैं, तो ऐसा लगता है कि आप किसी 'संप्रदाय' से जुड़े हैं। यह धर्म की बात नहीं है, यह आंतरिक विकास का विज्ञान है। आपको शिव की पूजा करने की जरूरत नहीं है। मैं नहीं करता। मैं हर चीज की पूजा करता हूं, मगर अपनी पूरी ज़िंदगी में मैंने कभी कोई प्रार्थना नहीं की। जब मैं 'शिव' कहता हूं, तो वह मेरे लिए सब कुछ है। आपको उस ध्वनि की ताकत पता होनी चाहिए। अपने तार्किक मन में न उलझे। यह उस तरह की बकवास नहीं है। यह उस श्रेणी में नहीं आता। यह, आपको आपकी मौजूदा स्थिति से परे ले जाने का तरीका है। यह उन सीमाओं से परे जाने का तरीका है, जिनमें इन्सान बंधा हुआ है।

हम योगी खानाबदोश लोग हैं, जो प्रकृति द्वारा निर्धारित नियमों पर नहीं चलते। प्रकृति ने इन्सानों के लिए कुछ नियम-कानून बनाए हैं, उन्हें उसी के भीतर रहना पड़ता है। भौतिक प्रकृति के नियमों को तोड़ना ही आध्यात्मिक प्रक्रिया है। इस अर्थ में हम नियमों को तोड़ने वाले लोग हैं और शिव नियमों को तोड़ने में सर्वश्रेष्ठ हैं। आप शिव की पूजा नहीं कर सकते, मगर आप उनके दल में शामिल हो सकते हैं।

सौजन्य : ईशा फाउण्डेशन

सरस

UDAIPUR DAIRY
Goat Flavoured Milk
Elaichi

"Saras" Goat Flavoured Milk - Sterilized
200 ml Bottle

Available at
Saras Outlets

Health Benefits of Goat Milk :

- Easily Digestible
- Blood Pressure Friendly
- Protects Heart
- Prevents Anaemia
- Enhances Skin health
- Improve Brain Health
- Good for infants
- Fight Inflammation
- Strengthen Bones & Immunity
- Assists in Weight Loss

Udaipur Dugdh Utpadak Sahakari Sangh Ltd.
Goverdhan Vilas, Ahmedabad Road, Udaipur (Raj.) 313001
Milk Collected by Rajiveeka Women Self Help Group

राजीविका

NRLM

ऑर्डर/होम डिलीवरी हेतु उदयपुर डेयरी के निम्न फोन नं. पर सम्पर्क करें - 0294-2640188, 7427811222, 7427811444

Paragon
The Mobile Shop

23, inside Udaipole, Udaipur
Contact No. 0294-2383373,
9829556439

Jio · BlackBerry · mi · INTEX · GiONEE SMART PHONE · htc · SAMSUNG · lenovo FOR THOSE WHO DO. · LAVA MOBILE PHONE · cromax nothing like anything · SONY · VIVO · oppo · itel · NOKIA Connecting People · MOTOROLA · Redmi 1S · honor

and all other mobile trusted brands are available under one roof..

For More Detail Pls Contact

Paragon
The Mobile Shop

रूमा को मिला मन चाहा आसमां

अपने साथ ही अभावों में जी रही हजारों ग्रामीण महिलाओं की सुई-धागे से संवारी जिन्दगी और दिलाई उनके काम को देश-दुनिया में पहचान

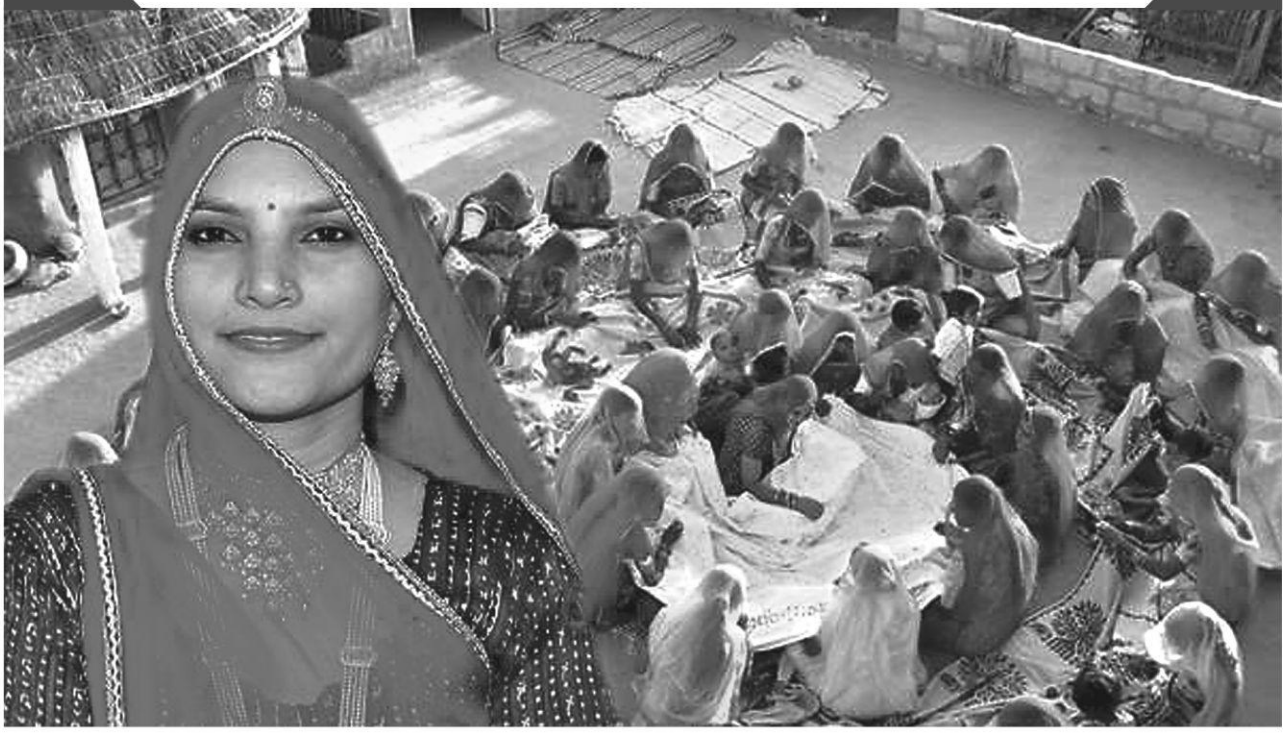

✍ हर्षिता नागदा

जीवन में कुछ कर गुजरने की चाह हो तो असंभव को भी संभव किया जा सकता है। ज़रूरत सिर्फ इस बात की है कि अपने काम के प्रति उत्साह और मज़बूत संकल्प के साथ विपरीत हालातों में भी आगे ही आगे बढ़ते रहा जाए। राजस्थान के बाड़मेर जिले के गांव की गलियों से निकली 'रूमा देवी' ऐसी ही एक संकल्पबद्ध महिला है, जिसने अभावों और कुप्रथाओं से संघर्ष करते हुए अपने हुनर से देश-दुनिया में अपने नाम और देश का परचम फहराया है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा 'नारी शक्ति राष्ट्रीय पुरस्कार-2018' से सम्मानित रूमा को 7 जनवरी 2020 को मुम्बई में 'जानकी देवी बजाज पुरस्कार' प्रदान किया गया।

खास शैली और प्रतिभा की धनी तथा देश में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण की पहचान बन चुकी राजस्थान की रूमा देवी को 7 जनवरी 2020 को ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए मुम्बई में आइएमसी लेडिज विंग की ओर से एक भव्य समारोह में 27वां जानकी देवी बजाज पुरस्कार-2019 प्रदान किया गया। गीतकार-कवि एवं फिल्म सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष प्रसून जोशी ने पुरस्कार के रूप में उन्हें 10 लाख रुपए नगद और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

इस अवसर पर भारत की प्रमुख महिला उद्यमी, उनके प्रतिनिधि, प्रमुख स्वयंसेवी संस्थाओं के संचालक, स्वतंत्रता सेनानी व समाज सेवी उद्योगपति स्व. जमनालाल बजाज-जानकी देवी बजाज के पौत्र शेखर बजाज सहित कई जानी-मानी हस्तियां मौजूद थीं।

रूमादेवी मूलत: बाड़मेर जिले के 'मंगला की बेड़ी' गांव की रहने वाली हैं। पांच साल

> "मेरी दादी ने मुझे कढ़ाई का काम सिखाया था। मैंने उसे आगे ले जाने का सपना संजो लिया। जब मैंने काम करना शुरू किया, उस समय परिवार में घर से बाहर जाकर काम करने पर सख़्त प्रतिबंध था। इसके लिए मुझे अपने ही परिजनों के साथ संघर्ष करना पड़ा। शुरू-शुरू में तो घूंघट में ही काम करना पड़ता था। मगर जैसे-जैसे काम फैलता गया और काम की सराहना होने लगी तो परिवार ने उन्हें घूंघट के बिना भी सहर्ष स्वीकार किया।
>
> - रूमा देवी"

नारी शक्ति पुरस्कार-2018

की उम्र में सिर से मां का साया उठ गया। पिता के दूसरी शादी करने के बाद चाचा के घर पली-बढ़ी किन्तु अभावों में। इन्होंने वह वक्त भी देखा जब 10 किमी दूर से बैलगाड़ी पर ड्रमों में पानी लादकर लाना पड़ता था। शादी भी कम उम्र में होने से इन्हें आठवीं के बाद शिक्षा छोड़नी पड़ी। तब ये सत्रह वर्ष की थीं। ससुराल में भी आर्थिक तंगी से रूबरू होना पड़ा। तब रूमा ने तय किया कि क्यों न आत्मनिर्भर बना जाए। इसी सोच के चलते वर्ष 2006 में गांव की दस महिलाओं के साथ स्वयं सहायता समूह बनाया। प्रत्येक से 100-100 रुपया इकट्ठा किया। कपड़ा, धागा और प्लास्टिक के पैक्टस खरीदकर कुशन और बैग बनाने का काम शुरू किया। शुरू के कई माह दिक्कत आई, चीजें बिक नहीं रही थी, समूह सदस्याओं में हताशा का माहौल बन रहा था, लेकिन रूमा ने न हौसला खोया और न समूह की सहेलियों को खोने दिया। वक्त ने करवट ली। अपनी चीजों को लेकर गांव में लेकर निकल पड़ीं। लोगों का ध्यान इनके हस्तशिल्प की ओर गया और बिक्री शुरू हुई। आसपास गांवों में भी जाने लगीं, वहां भी समूह बनाए। परिणाम मिलने लगा।

बाड़मेर के बाद इन्होंने अपना कार्यक्षेत्र पड़ौसी बीकानेर जैसलमेर और जोधपुर जिलों के 75 गांवों को बनाया और 17 से 70 आयु वर्ग की 22 हजार गरीब और साधारण परिवार की महिलाओं को अभावों की ज़िंदगी से निकालकर उनके परिवारों का जीवन स्तर बेहतर बनाने में मदद की।

ग्रामीण विकास एवं चेतना संस्थान, बाड़मेर से जुड़ने के बाद तो रूमा और उसकी प्रेरणा से गठित स्वयं सहायता समूहों की तकदीर ही बदल गई। संस्थान ने समूहों की महिलाओं के लिए न केवल हस्तशिल्प प्रशिक्षण की व्यवस्था की, बल्कि उन्हें मार्केटिंग के गुर भी सिखाए। बाद में कुछ वर्षों तक रूमा भी संस्थान की अध्यक्ष रही। नतीजा यह रहा कि इन समूहों के हस्तशिल्प सात समंदर पार विदेशी सैलानियों को भी पसंद आने लगे और रूमा को अन्तरराष्ट्रीय पहचान मिलने लगी। लन्दन, जर्मनी, कोलम्बो व सिंगापुर के फैशन वीक्स में उन्हें आमंत्रित कर उनके उत्पादों की प्रदर्शनियां लगाई गईं।

दिल्ली के प्रगति मैदान में टैक्सटाइल फेयर्स इंडिया(टीएफआई) द्वारा आयोजित फैशन शो स्पर्द्धा में देशभर के नामी डिजाइनर्स के साथ-साथ रूमा देवी ने भी अपने समूह के कलेक्शन रैंप पर उतारे। प्रतियोगिता का पहला राउण्ड रूमा देवी ने गत वर्ष मई में ही क्लियर कर लिया था, जिसमें सम्पूर्ण भारत से 14 प्रतिभावान यंग डिज़ाइनर्स को दूसरे राउण्ड के लिए चयनित किया गया। 16 जुलाई, 2019 को प्रतियोगिता के फाइनल राउण्ड में रूमा देवी का 'ब्लैक एण्ड व्हाइट' कलेक्शन प्रथम स्थान पर रहा। उन्हें 'डिजाइनर ऑफ द ईयर' के खिताब से नवाजा गया। उनमें अति सुन्दर कढ़ाई करने की ऐसी प्रतिभा है, जिसने उन्हें फैशन की दुनिया में एक अलग मुकाम दिलाया है। उनके साथ काम करने वाले डिजाइनरों में अनीता डोंगरे, बीबी रसेल, अब्राहिम ठाकोर, रोहित कामरा, मनीष सक्सेना सहित अमेरिका के भी कई प्रतिष्ठित डिजाइनर शामिल हैं।

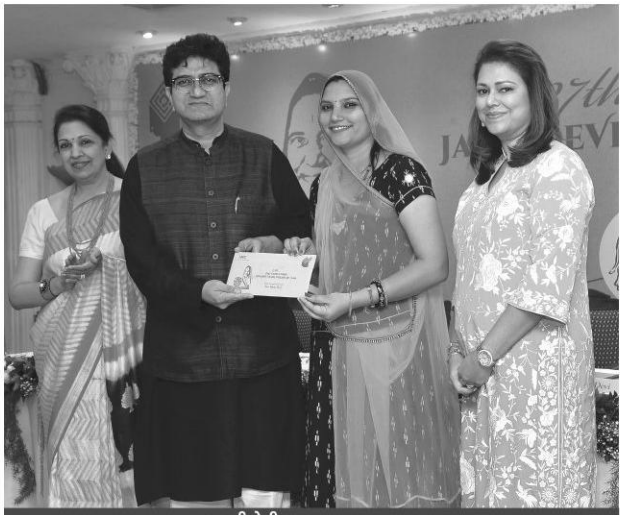

जानकी देवी बजाज पुरस्कार-2018

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि.

शास्त्री सर्कल, उदयपुर(राज.)

गणतंत्र दिवस पर भण्डार के सभी सदस्यों एवं उपभोक्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई

(प्रेम प्रकाश माण्डोत)
प्रशासक

(राजकुमार खांडिया)
महाप्रबन्धक

DERMADENT CLINIC

Dermatology | Dentistry | Hair Transplant

Hair Transplant

Before

After

Before

After

Before

After

Before

After

State of The Art Clinic

Our Specialties

- Stitch Less Hair Transplant (FUE)
- PRP
- LLLT
- Trichoscopy
- Mesotherapy

Recipient of The Mewar Health Care Achievers Award for Best Hair Transplant Surgeon in Udaipur for 5 consecutive years

Why Dermadent Clinic

- Pioneer of FUE Transplant in Rajasthan.
- Most experienced team of FUE in Rajasthan.
- Vast 8 years of experience in Hair Transplant.
- Dr. Prashant Agrawal; a renowned International faculty and trainer in the field of Hair Transplant.
- SAARC AAD recognised Hair Transplant Training center.
- Have trained more than 100 budding dermatologist in Hair Transplant across India.
- State of the art clinic and operation theatre.

Dr. Prashant Agrawal

Skin Specialist & Hair Transplant Surgeon

60 - Meera Nagar, Shobhagpura, 100 Ft. Road, Udaipur

Hair Transplant HELPLINE NO. 75975-12345

www.dermadentclinic.com

जलवायु संकट सूचकांक - 2020
बाढ़-तूफान खतरे वाले देशों की सूची जारी

खतरे वाले देशों में भारत का स्थान पांचवा

✍ डॉ. प्रीतम जोशी

दुनिया में जलवायु परिवर्तन के निरन्तर गंभीर होते जा रहे खतरे के नियमित आकलन की ज़रूरत है। सूचना के भरोसेमंद स्रोत विकसित करने के लिए आवश्यक कदम भी उठाने होंगे। खतरे की भयावहता को लेकर वैश्विक जलवायु संकट सूचकांक-2020 जारी किया जा चुका है। इसमें बाढ़ और तूफान से सर्वाधिक खतरे वाले शीर्ष 10 देशों में भारत पांचवें स्थान पर है।

मैड्रिड में जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के दौरान जर्मन वॉच ने 4 दिसम्बर 2019 को यह रिपोर्ट जारी की। इसे तैयार करने में 1999-2018 तक के आंकड़े इस्तेमाल किए गए। खतरे के आकलन में बाढ़, तूफान और लू से हुई तबाही को आधार बनाया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन से गरीब और विकासशील देश ही नहीं बल्कि धनी व औद्योगिक देश भी बुरी तरह प्रभावित हैं।

रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 1999-2018 के बीच प्राकृतिक आपदा की करीब 12 हजार घटनाएं हुईं। इनमें 4.95 लाख लोगों की जान गई। इससे हुई क्षति को 3.54 खरब अमेरिकी डॉलर के बराबर आंका गया। इसके अलावा 2018 में लू और गर्म हवाओं से सर्वाधिक तबाही हुई। जर्मनी, जापान और भारत में लू के प्रकोप की अवधि बढ़ गई है। हाल की वैज्ञानिक रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि पिछली सदी की तुलना में भीषण गर्मी के मामलों में सौ फीसदी तक इज़ाफा हो चुका है।

निश्चित रूप से विकास के लिए प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का दोहन आवश्यक है। लेकिन इसकी सीमा भी निर्धारित होनी चाहिए, जिसका कि पालन नहीं हो रहा है। विकास के नाम पर जंगलों को उजाड़ने का ही नतीजा है कि आज मनुष्य को बढ़ते वैश्विक तापमान, ओजोन परत के क्षरण, भूकम्प, भारी वर्षा, बाढ़ और सूखे जैसी आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है।

वैज्ञानिकों के अनुसार वनों के विनाश से वातावरण विषाक्त होता जा रहा है। हर साल दो अरब टन अतिरिक्त कार्बन-डाइऑक्साइड वायु-मंडल में घुल-मिल रही है। इससे जीवन का सुरक्षा कवच मानी जाने वाली ओजोन परत को भारी क्षति पहुंच रही है। वायुमंडल में 36 लाख टन कार्बन-डाइऑक्साइड की वृद्धि हो चुकी है और 24 लाख टन ऑक्सीजन समाप्त हो चुकी है। यदि हालात ऐसे ही बने रहे तो 2050 तक पृथ्वी के तापक्रम में लगभग चार डिग्री सेल्सियस तक वृद्धि हो सकती है। ओजोन को होने वाली क्षति से कुछ विशेष किस्म के अत्यन्त अल्पजीवी तत्वों(वीएसएलएस) की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है जो मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरनाक है।

घटते वन, बिगड़ते पर्यावरण को लेकर यदि हम भारत की बात करें तो यहां खतरे को समझते हुए भी विकास के नाम पर सरकारी और गैर सरकारी एजेन्सियां अंधाधुंध पेड़ों की कटाई कर रही हैं और वनों को उजाड़ा जा रहा है। कुछ ही महीनों पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने अपने स्तर पर संज्ञान लेकर देश की

संकट की वजह भारी बारिश

भारत में संकट की वजह भारी वर्षा है। भारी बाढ़ और भूस्खलन में 1,000 से अधिक लोग मारे गए। केरल राज्य विशेष रूप से प्रभावित हुआ। बाढ़ को पिछले 100 वर्षों में सबसे खराब बताया गया। इसके अलावा अक्तूबर और नवम्बर 2018 में भी 1,000 लोग मारे गए थे। भारत इन वर्षों में अत्यधिक गर्मी से भी पीड़ित था।

दस सर्वाधिक प्रभावित देश

1. जापान
2. फिलीपीन्स
3. जर्मनी
4. मेडागास्कर
5. भारत
6. श्रीलंका
7. केन्या
8. रवांडा
9. कनाडा
10. फिजी

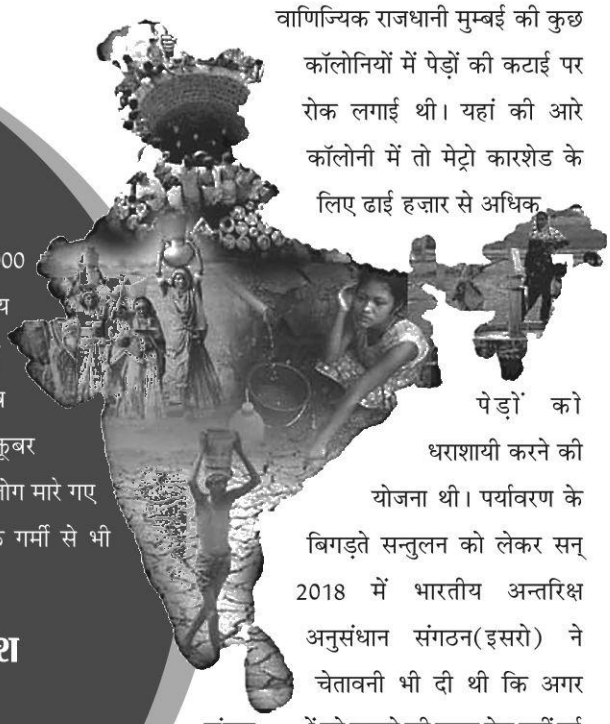

वाणिज्यिक राजधानी मुम्बई की कुछ कॉलोनियों में पेड़ों की कटाई पर रोक लगाई थी। यहां की आरे कॉलोनी में तो मेट्रो कारशेड के लिए ढाई हज़ार से अधिक पेड़ों को धराशायी करने की योजना थी। पर्यावरण के बिगड़ते सन्तुलन को लेकर सन् 2018 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन(इसरो) ने चेतावनी भी दी थी कि अगर जंगलों को बचाने की पहल तेज नहीं हुई तो 2025 तक देश के अन्य हिस्सों के साथ-साथ पूर्वोत्तर के छह राज्यों असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैण्ड और त्रिपुरा तथा केन्द्र शासित अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह का वन क्षेत्र खत्म हो जाएगा।

भारत शुरू से ही प्राकृतिक वन सम्पदा की दृष्टि से एक सम्पन्न देश रहा है। यहां पौधों और वृक्षों की करीब 47 हज़ार प्रजातियां पाई जाती हैं। लेकिन वनों की कटाई के कारण उनमें से अधिकांश नष्ट हो चुकी हैं और शेष विलुप्ति के कगार पर हैं। जंगल सिमटते जा रहे हैं। यह हालात तब हैं, जबकि 1950 से ही हर वर्ष जुलाई-अगस्त में वन महोत्सव आयोजित कर करोड़ों पौधे-वृक्ष लगाने का ज़ोर-शोर से ढिंढोरा पीटा जाता है। खरबों का जन-धन कागज़ों में पेड़ लगाकर भ्रष्टाचार में स्वाहा हो जाता है और हालात बद से बदतर होते जाते हैं। सरकार ने सन् 1952 से वन क्षेत्र के विस्तार के भी नित नए लक्ष्य बनाए, 1965 में वनों को बचाने के लिए केन्द्रीय वन आयोग भी गठित हुआ बावजूद इसके वनों का क्षेत्रफल बढ़ने के घटता ही चला जा रहा है। अब भी हमारे पास चेत जाने का समय है, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब न केवल लकड़ी, उद्योगों के लिए कच्चा माल, पशुओं के लिए चारा, औषधियां व प्रकृति प्रदत्त अन्य सैकड़ों नायाब चीजों से हाथ तो धोना ही पड़ेगा पर्यावरण भी तेजी से प्रदूषित होकर मानव के अस्तित्व को खतरे में डाल देगा।

जलवायु में बढ़ते तापमान को लेकर चिंताए नई नहीं हैं। इसके नतीजे में वैश्विक स्तर पर कितनी बड़ी चुनौती खड़ी हो सकती है, यह भी दुनिया के सभी देशों को पता है। इससे सम्बन्धित व्यापक अध्ययन और उनके निष्कर्ष अक्सर सामने होने के बावजूद अब तक इस मसले पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाहिर की जाने वाली चिन्ताएं सम्मेलनों से आगे किसी ठोस पहलकदमी तक नहीं पहुंच सकी हैं। इसी क्रम में संयुक्त राष्ट्र ने 15 जनवरी को बढ़ते वैश्विक तापमान पर एक बार फिर चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि पिछला दशक सबसे ज्यादा गरम रहा। उसने यह चेतावनी भी जारी की है कि वर्ष 2020 और उसके बाद आने वाले सालों में उच्च तापमान के कारण मौसम कभी अत्यधिक ठण्डा और कभी बेहद गरम रह सकता है। संयुक्त राष्ट्र के विश्व मौसम संगठन की इन आशंकाओं को गंभीरता से लेते हुए दुनिया भर में ठोस कार्य योजना पर काम की जरूरत है।

कविता

वाणी

वाणी है
अनमोल।
नहीं इसका
कोई मोल।।
बचपन को
दुलारती
वाणी।
बिगड़े को
दुत्कारती
वाणी।।
अनबन की
परिभाषा बनती
वाणी।
मधुरता की
अभिलाषा बनती
वाणी।।
राहगीर की
पहचान बनती
वाणी।
सफर को
समयदान देती
वाणी।।
मंजिल को
आसान करती
वाणी।
हर लक्ष्य को
सन्धान करती
वाणी।।

- बसन्त कुमार त्रिपाठी

ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग

करोड़ों जानवरों की मौत, कई प्रजातियां नष्ट, न्यू साउथ वेल्स में सर्वाधिक क्षति

✍ अशोक तम्बोली

पांच माह बीत चुके हैं लेकिन ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग नहीं बुझी है। तेज हवाओं के चलते विकराल हुई इस आग से अब तक करीब 2 हजार घर जलकर राख हो गए हैं और 30 करोड़ डॉलर से अधिक का नुकसान हो चुका है। जान माल की हानि के साथ पर्यावरण पर भी इसका खासा असर हुआ है।

सितम्बर 2019 से ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में आग लगी है, जब-जब हवाएं तेज हुईं, आग ने विकराल रूप लेकर जान-माल का बड़ा नुकसान किया। सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य न्यू साउथ वेल्स हुआ। जिसके करीब 50 लाख हेक्टेयर से अधिक के इलाकों में आसमान छूती आग की लपटें देखी गई। करीब 1500 घर तबाह हो गए। जंगल से आच्छादित पर्वत राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य सभी आग की चपेट में आ गए। छोटा सा खूबसूरत शहर बालमोरल तो पूरी तरह नष्ट हो गया।

सेना, वायु सेना और नौसेना सहित अकेले न्यू साउथ वेल्स इलाके में 2300 दमकलकर्मी लगाए गए हैं। अमेरिका, न्यूजीलैण्ड और कनाडा के दमकलकर्मी भी मदद कर रहे हैं। विक्टोरिया राज्य में आठ लाख हेक्टेयर से अधिक इलाका आग में स्वाहा हो गया।

इस भीषण आग से कई जंगली जानवरों के विलुप्त होने की आशंका है। अब तक करोड़ों जानवरों के मारे जाने का अनुमान है। वन्य जीव बचाव समूह 'वाइर्स' के साथ काम करने वाली प्राइस ने बताया कि हमें लगता है कि आग में बहुत कुछ नष्ट हो गया है। इसके चलते 'कोला' जानवरों के झुलसे हुए शरीरों, 'पोसम्स' के जले हुए पंजों और कंगारूओं के शवों के चित्र सामने

आ रहे हैं। मेंढक, कीट-पतंगे, अकशेरूकी व सरीसृप जैसे कम नज़र आने वाले जन्तुओं का भी आग के चलते लगभग सफाया हो गया है।

आपातकालीन प्रबंधन विभाग के अनुसार न्यू साउथ वेल्स में लगभग 135 जगहों पर आग लगी हुई है। वहीं, विक्टोरिया में वह 23 जगहों पर वह विकराल रूप में सामने आ रही है।

प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने आग में बर्बाद हुए बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण और अन्य राहत उपायों के लिए जनवरी के पहले सप्ताह में 'नेशनल बुशफायर रिकवरी एजेन्सी की स्थापना की।' यह एजेन्सी लोगों के मानसिक स्वास्थ्य में भी सहायता प्रदान करने का कार्य करेगी।

ऑस्ट्रेलिया के सौ साल के इतिहास में 2019 सर्वाधिक गर्म वर्ष रहा। मौसम विभाग (ब्यूरो ऑफ मेट्रोलॉजी) ने इसकी पुष्टि की है। इस भीषण अग्निकाण्ड के चलते प्रधानमंत्री मोरिसन को जापान व भारत की यात्रा रद्द करनी पड़ी। वे पिछले माह 13 जनवरी को भारत आने वाले थे। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मोरिसन से टेलिफोन पर बात कर उन्हें संकट की इस घड़ी में हर संभव मदद की पेशकश की।

वैज्ञानिकों की चेतावनी पर गौर करें तो गर्म और शुष्क मौसम के कारण लगने वाली आग के मामले और ज्यादा बढ़ेंगे। ऑस्ट्रेलिया के कई हिस्सों में कुछ सालों से सूखे के हालात हैं। ब्यूरो ऑफ मेट्रोलॉजी के अनुसार 1950 के बाद से यहां तापमान में निरन्तर वृद्धि होती रही है। गर्म वातावरण के पीछे का प्राकृतिक कारण हिन्द महासागर में द्विध्रुव की स्थिति का बनना है। इसमें समुद्र के पश्चिमी भाग के आधे हिस्से में समुद्र का सतही तापमान गर्म है और पूर्व में ठण्डा है। इन दोनों तापमानों के बीच का अन्तर पिछले 60 सालों में सबसे ज्यादा शक्तिशाली है। यही वजह है कि पूर्वी अफ्रीका में औसत से ज़्यादा बारिश हुई और बाढ़ के हालात बने। वहीं, दक्षिण-पूर्वी एशिया और ऑस्ट्रेलिया में सूखा पड़ा। मौसम वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि ऑस्ट्रेलिया में गर्म तापमान और आग का खतरा आगे भी बना रहेगा।

ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग का असर न्यूजीलैंड के फ्रांज जोसेफ ग्लेशियर पर भी पड़ा है। ग्लेशियर का रंग सफद से पीला हो गया है। ऐसा आग का धुंआ यहां तक पहुंचने से हुआ। न्यू साउथ वेल्स से न्यूजीलैंड की दूरी करीब 2,445 किमी है।

पाठकपीठ

'प्रत्यूष' के नियमित पाठक हैं मैं और मेरा परिवार। इसमें साहित्य, संस्कृति और कला सहित जीवन के सभी पक्षों पर पढ़ने को मिल जाता है। नववर्ष का अंक भी अच्छा लगा। पत्रिका में प्रदूषण को लेकर काफी-कुछ लिखा जा रहा है। निश्चित रूप से हमें पर्यावरण संरक्षण के मामले में समय रहते चेत जाना चाहिए।

-**अभिषेक सिंघवी,** उद्योगपति

सर्दी में जन सामान्य के लिए उपयोगी आलेख जनवरी 2020 अंक की विशेषता थे। योगाचार्य कौशल कुमार व श्रुति गोयल के आलेख संग्रहणीय हैं। सर्दी के मौसम में अस्वस्थ लोगों व बुजुर्गों के लिए सावधानी आवश्यक होती है, आपके आलेख उसी दिशा में सचेत करते हुए उपाय भी बताते हैं।

- **शांतिलाल जैन,** उद्योगपति

'प्रत्यूष' के पृष्ठ 52 पर जनवरी 20 के अंक में गणितज्ञ वशिष्ट नारायण सिंह के बारे में जो भी जानकारी दी गई, उससे हृदय भर आया। हम क्यों देश की ऐसी प्रतिभाओं को सहेजने के प्रति लापरवाह बने हुए हैं। देश के नेतृत्व को अब भी ध्यान देना चाहिए।

- **प्रकाश चन्द मेनारिया,** उद्यमी

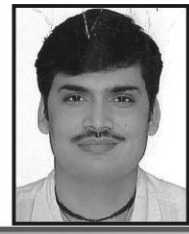

'प्रत्यूष' के जनवरी 2020 के अंक में 'वसंत' ऋतु पर मल्टीकलर आलेख बहुत सुन्दर बन पड़ा है। इस सम्बन्ध में ओशो के विचार बहुत ही सारगर्भित लगे। निश्चय ही 'वसंत' को हम कभी भी महसूस कर सकते हैं, बशर्ते जीवन में प्रसन्नता और आनंद हो।

- **दीपक चौधरी,** उद्यमी

Ramesh C. Sharma
B.E. (HONS.) ELECT. MIE, FIV, FIIISLA
Director
TECHNOMIC ENGINEERS
SURVEYOR & LOSS ASSESSORS
Approved Valuer Chartered Engineer (India) Insurance Surveyor & Loss Adjuster
85-K, Bhupalpura Udaipur - 313 001 (Raj) Ph. : (0294) 2413285, 2427165 (R) 2414101 (O)
Mobile : 9414156285, 9829556285, E-mail: technomic@gmail.com

2020 : भाजपा की असली की परीक्षा

✍ अनुजा

भाजपा ने 2019 में केन्द्र में वापसी करने वाली पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनकर इतिहास रच दिया। हालांकि, उसे राज्यों के चुनावों में असफलताओं का सामना करना पड़ा। महाराष्ट्र, झारखंड में सत्ता हाथ से चली गई और हरियाणा में सरकार बचाने के लिए गठबंधन का सहारा लेना पड़ा। 2020 में एक बार फिर भाजपा की प्रतिष्ठा दांव पर होगी और उसकी असली चुनौती होंगे दिल्ली और बिहार के विधानसभा चुनाव।

70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा के चुनाव में भाजपा को मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की आम आदमी पार्टी से लड़ना है तो वहीं अस्तित्व की जंग लड़ रही कांग्रेस के साथ भी कड़ा मुकाबला होगा। दिल्ली में पार्टी लोकसभा चुनाव के प्रदर्शन को दोहराना चाहेगी, जब उसे सातों सीटें मिलीं थीं। 2014 लोकसभा चुनाव में भी उसे सातों सीटें मिलीं थीं लेकिन विधानसभा चुनाव में करारी हार झेलनी पड़ी थी।

दिल्ली में 8 फरवरी को चुनाव होने वाले हैं और नतीजा 11 फरवरी को घोषित हो जाएगा। आम आदमी पार्टी को जहां 2015 की प्रचंड जीत को दोहराने की उम्मीद है, वहीं भाजपा 2019 लोकसभा चुनाव में अपने प्रदर्शन से आशावादी है। कांग्रेस भी लोकसभा चुनाव में अपने प्रदर्शन के आधार पर अपनी खोई जमीन वापस पान की उम्मीद कर रही है। इस बीच एबीपी न्यूज-सी वोटर के ऑपिनियन पोल में दिल्ली में एक बार फिर आम आदमी पार्टी की जबरदस्त जीत की भविष्यवाणी की गई है। यह सर्वे 1 जनवरी से 6

इन पर भी नजर

बजट

देश में आर्थिक सुस्ती की खबरों के बीच वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण फरवरी में भाजपा सरकार के दूसरे कार्यकाल का पहला पूर्ण बजट पेश करेंगी।

एनपीआर

अप्रैल से राष्ट्रीय जनगणना रजिस्टर (एनपीआर) और जनगणना का कार्य शुरू होगा, जिसके खिलाफ कई राज्यों ने विरोध दर्ज कराया है।

महत्वपूर्ण विधेयक

सामाजिक सुरक्षा, डाटा सुरक्षा, सरोगेसी बिल, डीएनए टेक्नोलॉजी नियंत्रण समेत तमाम विधेयक संसद से पारित होने हैं।

राज्यसभा

राज्यसभा में 69 सदस्यों का कार्यकाल इस साल पूरा होगा। इनमें ज्यादातर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान से हैं जहां भाजपा विपक्ष में है।

बड़ी चुनौतियां

दिल्ली का दंगल जीतना

- दिल्ली विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए प्रतिष्ठा की लड़ाई है क्योंकि यहां वह लगभग दो दशकों से सत्ता से बाहर है।
- यहां सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के अलावा कांग्रेस से त्रिकोणीय मुकाबले के लिए उसे रणनीतिक बिसात बिछानी होगी।

- दिल्ली में भाजपा को केजरीवाल के सामने मुख्यमंत्री पद का चेहरा और विकास के मुद्दों पर मुकाबला करना होगा

बिहार में फिर वापसी

- पिछले विधानसभा चुनाव के बाद बने नए गठबंधन की परीक्षा। एनडीए का मुकाबला राजद-कांग्रेस के महागठबंधन से होगा।
- बिहार में जदयू और लोक जनशक्ति पार्टी के साथ तालमेल बनाए रखना भाजपा के लिए सबसे बड़ी चुनौती होगी।

- यहां एनडीए की जीत इसलिए महत्वपूर्ण होगी क्योंकि हिन्दी भाषी क्षेत्र में भाजपा अपनी पकड़ नहीं छोड़ना

जनवरी तक किया गया। सर्वे का सैंपल साइज 13.076 था।

दूसरी ओर बिहार पहला राज्य है जहां 2014 में केन्द्र की सत्ता पाने के बाद भी भाजपा को हार का सामना करना पड़ा था। हालांकि, बाद में जदयू प्रमुख नीतिश कुमार ने भाजपा और लोकजनशक्ति पार्टी के साथ मिलकर सरकार बनाई। दोनों दलों का साथ बनाए रखना भाजपा के लिए बड़ी चुनौती होगी।

दिल्ली : चुनाव में पार्टियों का प्रदर्शन

वर्ष	आम आदमी पार्टी		भारतीय जनता पार्टी		कांग्रेस	
	सीट	वोट प्र.श.	सीट	वोट प्र.श.	सीट	वोट प्र.श.
2015	67	54.34	3	32.19	0	9.65
2013	28	29.49	31	33.07	8	24.55
2008	–	–	23	36.34	43	40.31

महाराष्ट्र में शिवसेना से अलगाव और झारखंड में आजसू के साथ गठबंधन टूटने के बाद भाजपा नहीं चाहेगी कि बिहार में इसकी पुनरावृत्ति हो। नागरिकता कानून को लेकर जदयू उपाध्यक्ष प्रशांत किशोर और भाजपा नेता व उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी के बीच हुई जुबानी जंग में बात सीट बंटवारे तक पहुंच गई थी। प्रशांत किशोर ने यहां तक कहा कि जदयू को अधिक सीटों पर चुनाव लड़ना चाहिए, लेकिन सुशील मोदी ने कहा कि दोनों दलों का शीर्ष नेतृत्व सीट बंटवारे पर अंतिम फैसला लेगा। इससे गठबंधन के भविष्य को लेकर उपजे संशय पर भाजपा साफ कर चुकी है कि बिहार में एनडीए नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ेगा। राजनीतिक विश्लेषक सुब्रत मुखर्जी के अनुसार, दिल्ली में केजरीवाल की स्थिति मजबूत मानी जा रही है, भाजपा का मुख्य उद्देश्य अपनी स्थिति में सुधार करना होगा। बिहार एक कठिन लड़ाई होगी और किसी भी पार्टी के लिए वॉकओवर नहीं होगा।

सेल्फी की हिन्दी

बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन की हिन्दी पर पकड़ कितनी मजबूत है, इससे हर कोई वाकिफ है। वे आए दिन सोशल मीडिया में इसका नमूना भी पेश करते रहते हैं। उन्होंने पिछले दिनों 'सेल्फी' का एक नया शब्द ईजाद किया। अभिनेता ने ट्विटर अकाउंट पर अपनी एक ब्लैक एंड व्हाइट फोटो साझा की। इसमें वे चश्मा पहने और गर्म कपड़ों में मस्ती के मूड में नजर आ रहे हैं। उनका यह फोटो एक सेल्फी है। अमिताभ ने 'सेल्फी' का हिन्दी अनुवाद ईजाद करते हुए लिखा – 'व्यक्तिगत दूरभाषित यंत्र से हस्त उत्पादित स्व चित्र।' अमिताभ को हाल में हिन्दी सिनेमा में उनके सराहनीय योगदान के लिए दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से नवाजा गया है।

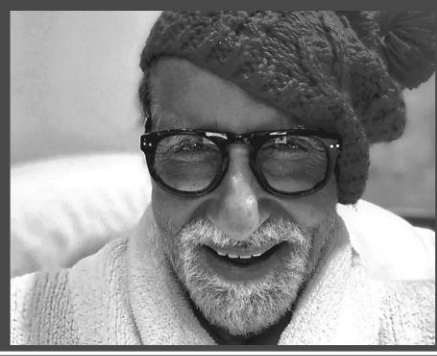

सेहत बनाने का मौसम

✍ डॉ. अनिता शर्मा

संतुलित भोजन और नियमित व्यायाम से बीमारियों की आशंका कम हो जाती है। सर्दी का मौसम सेहत बनाने का है, ऐसे में यह भी जानना ज़रूरी है कि किन चीजों को आहार में खास तौर पर शामिल किया जाए। हृदय रोगियों के लिए बादाम और पिस्ता के अलावा ग्रीन टी का सेवन काफी लाभकारी है। विटामिन 'डी' के साथ ही भोजन में करौंदा या क्रेनबरी को भी शामिल किया जाए। किसी प्रकार की असुविधा पर चिकित्सक से तुरन्त परामर्श किया जाना बेहतर होगा।

सर्दी में पाचन क्षमता अच्छी रहती है, जिससे भारी खाना भी पच जाता है। इस मौसम में कई रोगों की भी आशंका रहती है। सर्दी-जुकाम या फ्लू से बचने के लिए शरीर को मज़बूत इम्युनिटी सिस्टम की ज़रूरत होती है। सही भोजन से शरीर को गर्मी और मज़बूती मिलती है। इसीलिए इस सर्द मौसम में गर्म तासीर की चीजें खाई जाती हैं।

गर्मागर्म चाय का कमाल

इस मौसम में गले में खराश और खिचखिच सामान्य है। ऐसे में गर्म चाय जरूरी होती है, बशर्ते उसमें दालचीनी, काली मिर्च, अदरक, तुलसी की पत्ती, लौंग और इलायची डालें। सुबह एक कप ऐसी चाय पीने से कई रोगों से निजात मिल सकती है। इससे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत होती है और शरीर निरोगी रहता है।

फाइबर वाला भोजन

आहार में फाइबर्स शामिल करें। शुगर के मरीज घुलनशील फाइबर्स और वजन कम करने वाले न घुलने वाले फाइबर्स का सेवन करें। इससे गैस्ट्रिक सिस्टम भी सुचारू रहता है। युवाओं को प्रतिदिन 15 ग्राम फाइबर लेना चाहिए। फलों व सलाद का सेवन करें। शरीर हाइड्रेट रहे। फाइबर्स के साथ पर्याप्त पानी पीना बहुत जरूरी है।

सूप भी है मददगार

पालक या हरे साग को मिला कर सूप बनाया जाए तो इस मौसम का मुकाबला आसानी से किया जा सकता है। चाहें तो सूप में टमाटर प्याज और गाजर डाल सकते हैं। गर्मागर्म सूप शरीर को गर्माहट देने के साथ ही मन को भी प्रसन्न रखता है। यह ऊर्जावान बनाता है और रोगों से लड़ने की क्षमता भी प्रदान करता है।

दिल को संभाले

इस मौसम में दिल और उच्च रक्तचाप के रोगियों को अपना ख्याल रखना चाहिए। ठंडे मौसम में दिल की धमनियां सिकुड़ती हैं, जिससे हृदय में रक्त और ऑक्सीजन का संचार कम होने लगता है। इससे हाइपरटेंशन और ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। ठंडे मौसम में ब्लड प्लेटलेट्स ज्यादा सक्रिय और चिपचिपे होते हैं, इसलिए रक्त के थक्के जमने की आशंका बढ़ जाती है। हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को 40 साल की उम्र के बाद रक्तचाप की जांच कराते रहना चाहिए। ब्लड प्रेशर, शुगर व कोलेस्ट्रॉल की भी नियमित जांच कराएं।

सांस के रोगियों की सांसत

ठंडे मौसम में 60 से 70 प्रतिशत तक खांसी व दमा की बीमारियां बढ़ती हैं। लापरवाही से इन बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। सामान्य मौसम में नाक से ठंडी हवा प्रवेश करने पर गर्म होकर फेफड़ों तक पहुंचती है, जबकि इस मौसम में हवा गर्म नहीं हो पाती है। इससे दमा पीड़ितों के फेफड़ों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लगातार ऐसा होने से फेफड़ों में इन्फेक्शन हो जाता है। सांस के रोगियों को सांस लेने में तकलीफ होती है। समय पर इलाज न होने से निमोनिया का खतरा बढ़ जाता है।

कैसा लगा यह अंक

इस अंक का कौन सा आलेख आपको अपेक्षाकृत ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? क्या आप भी लिखते हैं? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

pankajkumarsharma2013@gmail.com

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

GRACE

Grace Marble & Granite P. Ltd.

Grace Exports

N.H. 8, Amberi, Udaipur - 313 016 (Raj.) India

Tel. : 91-294-2440474, 2440475 Fax : +91-294-2440135

E-mail : grace_export@yahoo.co.in, Info@graceexport.com

Website : www.graceexport.com

सर्दी का चटखारा

सर्दी के मौसम का अन्तिम चरण है। इस में भी तप्त भोजन का सेवन ही करना चाहिए। तप्त भोजन का तात्पर्य है, जो शरीर को गर्म और पुष्ट बनाए रख सके। भोजन में उन चीजों को लिया जाए जिनकी तासीर गर्म हो। यहां कुछ ऐसी ही रेसिपी दी जा रही है, जो इस मौसम के अनुकूल और स्वास्थ्यवर्द्धक है। *- शिवनिका*

मैथी थेपला

सामग्री : मैथी-200 ग्राम, मल्टीग्रेन आटा-आवश्यकतानुसार मात्रा में, अदरक पेस्ट-एक छोटा चम्मच, हरी मिर्च पेस्ट-आधा चम्मच, अजवायन-एक छोटा चम्मच, हींग-चुटकी भर, नमक-स्वादानुसार, धनिया पाउडर-एक छोटा चम्मच, आमचूर पाउडर-1/4 छोटा चम्मच, गरम मसाला-आधा छोटा चम्मच, रिफाइंड तेल-आवश्यकतानुसार

विधि : मैथी को बारीक काट लें। तेल को छोड़कर सभी सामग्री मिला लें। आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए गूंथ लें। तैयार आटे की लोइयां बनाकर बेल लें। गरम तवे पर डालें। उलट-पुलट कर दोनों ओर तेल लगाते हुए मंदी आंच पर सेकें।

गाजर का कलाकंद

सामग्री : कद्दूकस की हुई लाल गाजर-250 ग्राम, दूध-3 कप, दही खट्टा-3 बड़े चम्मच, मिल्कमेड-आधा टिन चीनी-2 बड़े चम्मच और चांदी का वर्क इच्छानुसार।

विधि : विधि : कद्दूकस की हुई गाजर को हाथ से कसरकर निचोड़ें ताकि उसका पानी निकल जाए। दूध को एक कड़ाही में उबलने रखें। उबलते दूध में दही डाल दें।

जब दूध फट जाए, तो निचुड़ी हुई गाजर डाल दें व चीनी भी। जब मिश्रण गाढ़ा होने लगे और पानी सूख जाए तो उसमें आधा मिल्कमेड डाल दें। जब मिश्रण इकट्ठा होकर कड़ाही छोड़ने लगे, तब उसे एक चिकनी थाली में पलटकर जमा दें। ठंडा होने पर बर्फी के आकार में पीस काट लें।

बाजरे का चूरमा

सामग्री : गुड़-160 ग्राम, घी-80 ग्राम, काजू-8-10, इलायची 3-4

विधि : बाजरे के आटे को एक बर्तन में निकाल लें और 1 चम्मच घी डालकर अच्छी तरह मिला लें। गुनगुने पानी की सहायता से सख्त आटा गूंथ कर तैयार कर लें। गूंथे हुए आटे से दो लोई बनाकर तैयार कर लें। एक लोई को हाथ से गोल करें और दोनों हथेलियों के बीच में रखें और दबाकर चपटा कर लें और इसे सूखे गेहूं के आटे में लपेटकर चकले के ऊपर रख कर मोटा परांठा बेल लें। तवा गरम करें और गरम तवे पर थोड़ा सा घी लगाकर चारों ओर फैला दें और बेले हुए परांठे को तवे के ऊपर डाल दें। परांठे को नीचे की ओर से हल्का सिकने पर दूसरी तरफ पलट दें और जब परांठे के दूसरे भाग में सुनहरी चित्ती आने लगे तो परांठे के पहले वाले भाग के ऊपर थोड़ा सा घी डालकर इस को चारों तरफ अच्छी तरह से फैला दें। परांठे को दूसरी तरफ पलटे तथा इस भाग पर भी थोड़ा सा घी डालकर इसको अच्छी तरह से चारों ओर फैला दें। परांठे को पलट-पलटकर और दबा कर दोनों ओर सुनहरी चित्ती आने तक अच्छे से सेक लें तथा इसको एक प्लेट में निकालकर रख लें। इस तरह से दूसरा परांठा बनाकर तैयार कर लें।

परांठे के ठंडा हो जाने पर तोड़ कर बारीक कर लें। काजू को छोटा-छोटा काट लें, इलायची को छील कर पाउडर बना लें और बारीक किए हुए पराठे में डालें और गुड़ को भी एकदम बारीक तोड़कर डाल दें और 1 चम्मच घी डालकर सभी चीजों को अच्छे से मिला दें। स्वादिष्ट चूरमा तैयार है।

बाजरे की टिक्की

सामग्री : बाजरे का आटा-400 ग्राम, गुड़-150 ग्राम, तिल-100 ग्राम, तेल-तलने के लिए।

विधि : एक कप पानी गरम करें और गुड़ डाल कर घोल लें। किसी बर्तन में बाजरे का आटा छान लें। आटे में तिल और 2 चम्मच तेल मिला दें। गुड़ के घोल की सहायता से नरम आटा गूंथ लें। भारी तले की कढ़ाई में तेल डाल कर गरम करें और गूंथे हुए आटे से थोड़ा सो आटा निकाल कर, उसे हथेली की सहायता से मसल कर मुलायम करें। जब आटा मुलायम हो जाता है तब एक छोटे नींबू के बराबर आटा तोड़कर लोई बना लें। इस लोई को हथेलियों से दबाकर टिक्की बना लें। अब टिक्की को गरम तेल में डाल कर पलट-पलट कर धीमी और मद्धम आग पर अच्छी ब्राउन होने तक तल लें। टिक्कियां तल जाने के बाद इन्हें प्लेट में निकाल लें। गरमा गरम बाजरे की टिक्की खाएं और खिलाइएं।

मिक्स दाल ढोकला

सामग्री : चने की दाल-1/2 कप, मूंग की धुली दाल-1/2 कप, उड़द की दाल-1/2 कप, लाल मसूर की दाल-1/2 कप, हल्दी-1/2 छोटा चम्मच, नमक-एक छोटा चम्मच, हरी मिर्च और अदरक का पेस्ट-एक छोटा चम्मच, नींबू का रस-2 छोटा चम्मच, फ्रूट सॉल्ट-एक छोटा चम्मच।

तड़का लगाने के लिए: तेल-एक बड़ा चम्मच, राई-1/2 छोटा चम्मच, हरी मिर्च के टुकडे-3 से 4, चीनी-एक छोटा चम्मच, नींबू का रस-एक छोटा चम्मच, नमक-1/2 छोटा चम्मच, हरा धनिया-थोड़ा सा, पानी-आवश्यकतानुसार।

विधि : दालों को भिगोकर पीस लें। फिर इन्हें दो घंटे के लिए छोड़ दें। उसके बाद उसमें फ्रूट सॉल्ट डालकर तुरंत ढोकले बनाएं। बीस मिनट तक पकाएं।

तड़का बनाना : एक बरतन में तेल डालें। हरी मिर्च और राई डालें। जैसे ही राई चटकने लगे, उसमें दो कप पानी डालें और फिर चीनी, नींबू नमक डालकर उबाल लें। ढोकले को थाली में डालें। ऊपर से तड़का डालें।

2020 में 5 माह देवशयन

पंचांग

साल 2020 में मांगलिक कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त कम ही रहेंगे। क्योंकि इस साल पुरुषोत्तम मास के कारण 2 अश्विन मास रहेंगे। इस वजह से इस साल देवशयन 4 नहीं करीब 5 महीनों तक होगा। वहीं मलमास, मीनमास, होलाष्टक और शुक्र तारा अस्त होने के कारण शुभ कार्यों के लिए मुहूर्त कम ही रहेंगे। इस तरह साल के 224 दिनों तक शुभ काम नहीं हो पाएंगे।

ज्योतिषियों के अनुसार मकर संक्रांति के दूसरे दिन अर्थात् 16 जनवरी से विवाह मुहूर्त प्रारंभ हो गए हैं। जो 1 मार्च तक रहेंगे। इसके अगले दिन से होलाष्टक शुरू हो जाएगा। वहीं 13 मार्च से मलमास प्रारंभ होगा, जो 13 अप्रेल तक रहेगा। इस एक माह की अवधि में विवाह नहीं होंगे। इसके बाद14 अप्रेल से शुरू होकर विवाह मुहूर्त विभिन्न तिथियों में 26 जून तक रहेंगे। इस बीच मई के आखिरी दिनों में 8 दिन के लिए शुक्र तारा अस्त रहेगा। देवउठनी एकादशी पर 25 नवम्बर से विवाह पुनः प्रारंभ होंगे, जो 11 दिसम्बर तक होंगे। इसके बाद पुनः एक माह के लिए मलमास प्रारंभ हो जाएग।

विवाह के शुभ मुहूर्त

● जनवरी 16 से 22 ● फरवरी 3 से 5, 9 से 18, 20, 25 से 27 ● मार्च 1 से 3, 7 से 13 ● अप्रैल 14, 15, 20, 25 से 27 ● मई 1 से 8, 10, 12, 17, 18 ● जून 13 से 15, 25, 26 ● नवम्बर 26, 30 ● दिसम्बर 1, 2, 6 से 9, 11

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का प्रारम्भिक सप्ताह लाभप्रद होगा, इच्छित कार्यों की पूर्ति सम्भव, राजकीय एवं शासकीय मामले पक्ष में रहेंगे, प्रतियोगी परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी, आय के नये स्थाई स्रोत बनेंगे। कर्म क्षेत्र में नई ऊंचाइयाँ मिलेगी। स्वास्थ्य उत्तम व दाम्पत्य जीवन सहयोगात्मक रहेगा।

वृषभ

माह पर्यन्त सकारात्मक ऊर्जा से लबरेज रहेंगे और रचनात्मक एवं प्रयोगात्मक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी। आय के नये आयाम बनेंगे, भाग्य का पूर्ण सहयोग रहेगा। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार मिलेगा।

मिथुन

माह मिश्रित फलदायी है। पूर्वार्द्ध फलप्रद होगा उसके बाद अपने ही विश्वास पात्र से कष्ट पहुंच सकता है, आंख मूंद कर किसी पर विश्वास न करें कार्य स्थल में परिवर्तन की सम्भावना, लम्बी दूरी की यात्रा भी सम्भव है। परिवार में विवाद की स्थिति बन सकती है।

कर्क

स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न करेंगे, जिससे व्यर्थ की चिन्ताएं बढ़ेंगी, सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, जीवन साथी के सहयोग से स्थाई योजना को क्रियान्वित एवं लाभ प्राप्त करेंगे। भाग्य का पूर्ण सहयोग रहेगा किन्तु शत्रु पक्ष हावी होने का प्रयत्न करेगा। फिजूल खर्चों में बढ़ोतरी सम्भव।

सिंह

माह के उत्तरार्द्ध में क्रोध में बढ़ोतरी, ऊर्जा का सही प्रयोग करें, अन्यथा व्यर्थ के विवाद एवं कानूनी दांव-पेच में फंसना पड़ सकता है। नौकरी-व्यवसाय में तरक्की, वरिष्ठजनों से सराहना मिलेगी। मान-सम्मान मिलेगा तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दाम्पत्य एवं संतान पक्ष भी उत्तम रहेगा।

कन्या

माह सामान्य सा है, आगे बढ़ने का यत्न करेंगे परन्तु अपने को वहीं का वहीं पायेंगे। पुरूषार्थ का फल जैसा मिलना चाहिए, नहीं मिल पाएगा। धैर्य रखें, सन्तान पक्ष से सन्तुष्टि, माता को कष्ट, भाई-बहिनों का सहयोग प्राप्त होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

तुला

राशि स्वामी का उच्च राशि में भ्रमण शुभ संकेत प्रदान करेगा, रूके हुए काम बनेंगे, घर-परिवार में मांगलिक कार्यों का सम्पादन होगा, पराक्रम एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे, वरिष्ठजनों का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होगा, स्वास्थ्य में नरमी, आय पक्ष सुदृढ़, भाग्य की अपेक्षा पुरूषार्थ पर अधिक ध्यान दें।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
1 फरवरी	माघ शुक्ला सप्तमी	नर्मदा जयंती
8 फरवरी	माघ शुक्ला चतुर्दशी	रामस्नेही जयंती
9 फरवरी	माघ शुक्ला पूर्णिमा	संत रविदास जयंती
15 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी	श्रीनाथ जी पाटोत्सव(नाथद्वारा)
21 फरवरी	फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी	महाशिवरात्रि
25 फरवरी	फाल्गुन शुक्ला द्वितीया	श्रीराम कृष्ण परमहंस जयंती

वृश्चिक

माह का पूर्वार्द्ध संतोषजनक है, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के पूर्ण योग, प्रयत्न करते रहें। आय पक्ष बाधित, इसके लिए यत्न करना होगा। भाई-बहिनों के सहयोग से बनी कार्य योजना सफल होगी। सन्तान पक्ष उत्तम, दाम्पत्य जीवन सुखद, न्यायिक, शासकीय एवं लम्बित राजकीय कार्यों में सफलता के योग हैं।

धनु

मन की चंचलता के कारण व्यर्थ के विवाद में उलझेंगे, जो भी योजना बनायेंगे उसे मूर्त रूप देने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। साझेदारी का कोई काम ठीक नहीं होगा। आय पक्ष अच्छा है, परन्तु कर्म क्षेत्र में बाधाओं का अनुभव करेंगे। महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगाएं, दाम्पत्य जीवन में कलह संभव, भाग्य सामान्य।

मकर

माह के पूर्वार्द्ध में अनिर्णय की स्थिति राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। लम्बे समय बाद नौकरी से लाभ मिलेगा। स्थाई कार्यों में अभिरूचि रहेगी, आय पक्ष उत्तम है। अपनी प्रतिभा के कारण माह के उत्तरार्द्ध में अपने कर्म क्षेत्र में निखार लायेंगे। स्वास्थ्य में गिरावट संभव।

कुम्भ

अपने कार्यों से अपने वरिष्ठजनों एवं अधिकारियों को प्रभावित करेंगे। आय के नये स्रोत भी बन सकते हैं, भाग्य सामान्य परन्तु पुरूषार्थ प्रबल सिद्ध होगा। अपनी प्रतिभा का प्रभुत्व दिखाने का अवसर प्राप्त होगा, दाम्पत्य जीवन सामान्य, विरोधी पक्ष का दमन और भाग्य श्रेष्ठ रहेगा।

मीन

किंचित बाधाओं के साथ अपनी कार्य योजनाओं को सम्पादित कर पाएंगे, भाग्य पूर्णरूपेण सहयोग प्रदान करेगा। आय पक्ष में नए आयाम स्थापित होंगे, विरोधी पक्ष हावी होने का प्रयत्न करेगा, शरीर में कोई नया रोग उत्पन्न हो सकता है, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे, लम्बी दूरी की यात्राएं टालने का प्रयत्न करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

कैलाश नागदा
9799652244

रवि मेडिकल स्टोर, उदयपुर

महाराणा भूपाल चिकित्सालय (जनरल हॉस्पिटल)
के सामने, उदयपुर
Phone :- 0294-2412464

सम्बन्धित फर्म

रवि मेडिकल स्टोर, सलूम्बर एवं लसाड़िया

श्रीमद् भागवत गीता व मीरा पर व्याख्यान

उदयपुर। जर्नादनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की ओर से पिछले दिनों श्रमजीवी महाविद्यालय में श्रीमद् भागवत गीता व भक्तिमती मीरा बाई पर व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता साहित्यकार प्रो. शीला भार्गव ने कहा कि भगवत् गीता ही जिन्दगी का सार है। भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश सिर्फ देश के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण दुनिया के लिए प्रासंगिक है। इसमें विशेष दिव्य शक्ति समाहित है, जो हमारे दुर्गुण समाप्त करती है। मीरां को समझने के लिए हमें तत्कालीन परिस्थितियों को समझना होगा। मीरां ने विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन को जिया।

मुख्य अतिथि कोटा खुला वि.वि. के पूर्व कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा थे। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मीरां का साहित्यिक और सांस्कृतिक काव्य हमारे लिये मानक पाठ है जो सदियों तक हमारी धरोहर रहेगा। मीरां को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों को समझना होगा। मीरां के साहित्य ने भारतीय संस्कृति

व सभ्यता को परिपुष्ठ किया तथा जीवन दृष्टि प्रदान की। प्राचार्य सुमन पामेचा, डिप्टी रजिस्ट्रार रियाज हुसैन ने भी विचार व्यक्त किये।

बी एन संस्थान ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान का 98वां स्थापना दिवस 2 जनवरी को मनाया गया। पदाधिकारियों, इकाईयों के प्राचार्य एवं अधिष्ठाताओं ने सामूहिक रूप से नर्बदेश्वर महादेव मन्दिर में

हवन किया। संस्थापक तत्कालीन महाराणा भूपाल सिंह मेवाड़ व सहसंस्थापकों की प्रतिमाओं पर माल्यर्पण किया गया। मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह आगरिया, प्रबन्ध निदेशक मोहब्बत सिंह रूपाखेड़ी ने कार्य योजनाओं पर प्रकाश डाला। उपाध्यक्ष प्रो. जीवन सिंह राणावत, संयुक्त मंत्री शक्तिसिंह कारोही, सदस्य पदमसिंह पाखण्ड, गजेन्द्रसिंह घटियावली, दिलीप सिंह राठौड़, ओल्ड बॉयज एसोसिएशन मंत्री नगेन्द्रसिंह सोलंकी, प्राचार्य डॉ. प्रेमसिंह रावलोत, डॉ. सिद्धराज सिंह सिसोदिया, अधिष्ठाता डॉ. देवेन्द्र सिंह सिसोदिया, डॉ. आशुतोष पितलिया, प्रधानाचार्य लाल शक्तावत, विरेन्द्रसिंह चुण्डावत मौजूद थे।

भाणावत को ग्लोबल इंटरनेशनल अवार्ड

उदयपुर। करेंसी मैन के नाम से मशहूर विनय भाणावत को वे फाउंडेशन ने ग्लोबल इंटरनेशनल अवार्ड से सम्मानित किया। संयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त वे फाउंडेशन ने मलेशिया से अवार्ड जारी किया, जिसको उदयपुर में निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने उन्हें प्रदान किया।

वेदी अध्यक्ष, गोठवाल सचिव निर्वाचित

आनंद प्रकाश वेदी

दिनेश गोठवाल

उदयपुर। श्री नामदेव टांक क्षत्रिय दर्जी समाज संस्थान के चुनाव में एडवोकेट आनंद प्रकाश वेदी अध्यक्ष और दिनेश गोठवाल सचिव निर्वाचित हुए। कोषाध्यक्ष पद पर मनोहरलाल टेलर, दिनेश पुत्र स्व. प्रभुलाल गोठवाल उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसी प्रकार नामदेव महिला समिति अध्यक्ष पद पर नीरजा बुला और युवा समिति अध्यक्ष के रूप में मनीष पोखरना निर्वाचित घोषित किये गये।

डॉ. वसीम को 'यूथ आइकन अवार्ड'

उदयपुर। राष्ट्रीय युवा दिवस पर राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी जयपुर एवं स्वास्थ्य मंत्रालय ने आर.एन.टी. पी.जी. कॉलेज कपासन के प्रबंध निदेशक डॉ. वसीम खान को यूथ आइकन अवार्ड से नवाजा। वसीम को रेड रिबन इकाई के लिए उत्कृष्ट कामों और 50वीं बार रक्तदान के लिए स्वास्थ्य मंत्री रघु शर्मा, तकनीकी मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग आदि ने सम्मानित किया।

ग्रामीण खेलकूद

नागदा ब्राह्मण क्रिकेट टूर्नामेंट-2019

ढूंढी-करदा ने खरका को हराया

उदयपुर। नागदा ब्राह्मण समाज का 16वां क्रिकेट टूर्नामेंट टूस-डांगियान के तत्वावधान में 25 से 29 दिसम्बर 2019 तक सम्पन्न हुआ। जिसका उद्घाटन प्रदेश कांग्रेस के सचिव पंकज शर्मा ने किया। अध्यक्षता 'प्रत्यूष' सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने की। विशिष्ट अतिथि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की एंकर जयश्री नागदा, नागदा समाज(मगरा) के अध्यक्ष गणेश नागदा, देवीलाल नागदा जगत व जगदीश नागदा भटेवर थे। समापन समारोह के मुख्य अतिथि विप्र फाउण्डेशन जोन 'ए' के अध्यक्ष के. के. शर्मा व विशिष्ट अतिथि विप्र फाउण्डेशन के जिलाध्यक्ष हिम्मत नागदा, नरेन्द्र पालीवाल व रणजीत शाकद्वीपी थे। पुरस्कार वितरण सत्र के मुख्य अतिथि चुन्नीलाल नागदा सोकड़ी थे। टूर्नामेंट में मेवाड़, मगरा, मेवल, छप्पन व उयदपुर की 12 टीमों ने भाग लिया। फाइनल मेवल की खरका व मगरा की ढूंढी-करदा एकादश के बीच हुआ। जिसमें ढूंढी-करदा विजय रही।

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते पंकज शर्मा

ट्राफी के साथ विजेता टीम

पहली बार विजयश्री का वरण करने वाली इस टीम के रवि नागदा ने बेहतर खेल का प्रदर्शन(78 रन) किया। चौथे क्रम के बल्लेबाज प्रेम नागदा के छक्के के साथ खरका के 162 रन के लक्ष्य को 25 ओवर से पहले ही इसी टीम के ध्वस्त कर दिया। रवि को मेन ऑफ द मैच चुना गया। टूस डांगियान क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजन समिति की व्यवस्था के लिए सभी चौखलों ने सराहना करते हुए इसका श्रेय ग्राम इकाई अध्यक्ष मांगीलाल नागदा, मीठालाल नागदा, देवीलाल नागदा, लक्ष्मीलाल नागदा, सोहन नागदा, शांतिलाल नागदा, गिरधारीलाल नागदा, मुकेश नागदा व हेमंत नागदा को दिया। रवि मेडिकल, उदयपुर ने चौके लगाने वालों को नकद पुरस्कार दिया। रस्साकशी, 100 मीटर दौड़ आदि स्पर्द्धाएं भी हुईं।

प्रस्तुति : मीठालाल नागदा

पीआई क्रिकेट ट्रॉफी स्पर्द्धा

उदयपुर। जिला क्रिकेट संघ के तत्वावधान में दिसम्बर 2019 में आयोजित उन्नीस साल से कम उम्र के खिलाड़ियों की पी-आई ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता में वंडर सीमेंट क्रिकेट एकेडमी ने अरावली क्लब को हराकर विजेता होने का गौरव प्राप्त किया। समारोह सिक्योर मीटर्स सभागार में हुआ। मुख्य अतिथि सिक्योर मीटर्स के एमडी अनन्या सिंघल व विशिष्ट अतिथि राकेश सक्सेना ने विजेता व उपविजेता टीम के खिलाड़ियों को प्रतीक चिन्ह व ट्रॉफी प्रदान की। सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज अनिरूद्ध सिंह, गेंदबाज रितिक औदिच्य व ऑलराउंडर अभिषेक चंदेल के संघ के डिप्यूटी प्रेसिडेंट विवेक भानसिंह व कोषाध्यक्ष महिपाल सिंह ने पुरस्कार दिए। संघ के अध्यक्ष मनोज भटनागर ने अतिथियों का स्वागत किया।

टेनिस का उभरता सितारा प्रद्युम्न

उदयपुर। रॉकवुड्स हाईस्कूल के छात्र प्रद्युम्न सिंह हिरन ने 65वीं राष्ट्रीय एसजी एफआई टेबिल टेनिस प्रतियोगिता में चयन होने के बाद जनवरी के पहले सप्ताह में बड़ौदा में आयोजित राष्ट्रीय स्पर्द्धा में भाग लेकर अच्छे खेल का प्रदर्शन किया। निदेशक दीपक शर्मा व प्राचार्य रीनू त्यागी ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

खेल महोत्सव में बच्चे से बूढ़े तक

उदयपुर। उदयपुर ऑटोमोबाइल्स डीलर्स एसोसिएशन द्वारा समाजसेवी स्व. किरणमल सावनसुखा की स्मृति में एमबीए कॉलेज ग्राउंड पर खेल महोत्सव-2020 गत दिनों सम्पन्न हुआ। सचिव तुषार जैन ने बताया कि इसमें बच्चों से लेकर 70 वर्ष तक के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक बसंत जैन ने बताया कि इस अवसर पर सुशीला सावनसुखा, भगवत सिंह सुराणा, सरोज सुराणा, विकास सुराणा का एसोसिएशन के अध्यक्ष गणेश अग्रवाल, संरक्षक भीमनदास एवं पूर्व अध्यक्ष चन्द्रसिंह कोठारी ने स्वागत किया।

अंजली राठौड़ को गोल्ड मेडल

अहमदाबाद। यूनाइटेड वर्ल्ड स्कूल ऑफ बिजनेस के बैच 2017 से 2019 का पिछले दिनों दीक्षांत समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें 100 से अधिक विद्यार्थियों को डिग्री एवं पदक प्रदान किए गए। उदयपुर की अंजली सिंह राठौड़ (मार्केटिंग) को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। अतिथियों में यूएसए के डॉ. जयदीप प्रभु व प्रो. गैरी मैकलीन ब्रिटेन भी शामिल थे।

डीपी ज्वैलर्स : 'बेस्ट रिंग ऑफ द ईयर'

उदयपुर। जेजेएस आई जे ज्वेलर्स चॉइस डिजाइन अवॉर्ड्स में डीपी ज्वैलर्स के आभूषण को 'बेस्ट रिंग ऑफ द ईयर' के अवॉर्ड से नवाजा गया। जीआईए की मेजबानी में जयपुर के होटल द क्राउन प्लाजा में हुए पुरस्कार समारोह में डीपी ज्वैलर्स के अनिल कटारिया ने पुरस्कार लिया। अवार्ड समारोह में 'वाणी कपूर' भी मौजूद थी।

भारतीय पत्रकार संघ पदस्थापना समारोह

वरिष्ठ पत्रकारों को मिला - 'गैलेक्सी ऑफ जर्नलिज्म अवार्ड'

भारतीय पत्रकार संघ, वड़ोदरा(गुजरात) के उदयपुर चैप्टर के पदस्थापना समारोह में 5 जनवरी को वरिष्ठ पत्रकारों को होटल अशोका ग्रीन में आयोजित एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में विष्णु शर्मा हितैषी, हिम्मत सेठ, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, मदन मोदी व रफीक पठान थे। समारोह के मुख्य अतिथि अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह, अध्यक्ष डॉ. खलील अगवानी, विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रदीप कुमावत, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष विक्रम सेन व जिलाध्यक्ष दिनेश गोठवाल ने उपरना, शॉल, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति प्रदान कर उनकी दीर्घावधि पत्रकारिता और उपलब्धियों का जिक्र किया।

शपथ : इससे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विक्रम सेन ने जिला इकाई के अध्यक्ष दिनेश गोठवाल, सचिव संजय खोखावत, उपाध्यक्ष अख्तर बोहरा, मोहम्मद इस्माइल, संगठन सचिव घनश्याम जोशी, कार्यालय सचिव पदम जैन, प्रवक्ता मन्सूर अली, कार्यकारिणी सदस्य कन्हैयालाल साहू, शकील खान एवं लखन शर्मा को पद की शपथ दिलाई।

बच्चे भी पुरस्कृत : पत्रकारों के मेधावी बच्चों एलीना व ऐनी इलियास, काशवी जैन, अजीज़ शेख, शिवम शर्मा, रूद्राक्ष दाधीच, लक्ष्य मूंदड़ा व आमिर बोहरा को भी पुरस्कृत किया गया। जिलाध्यक्ष ने हर वर्ष दिवंगत वरिष्ठ पत्रकार संजय गोठवाल की स्मृति में पुरस्कार की घोषणा की। कार्यक्रम में उदयपुर को फिल्म सिटी बनाने का अभियान लेकर चल रहे मुकेश माधवानी, प्रदेश कांग्रेस सचिव पंकज शर्मा, कांग्रेस नेता राजेश चुघ, भारतीय पत्रकार संघ के प्रदेशाध्यक्ष विकास जैन, डूंगरपुर के जिलाध्यक्ष मयंक चौबीसा, पत्रकार प्रदीप मोगरा, इलियास हुसैन, श्रीरत्न मोहता, उमेश शर्मा, भानुप्रताप सिंह धायभाई, विकास जोशी, योगेश नागदा, डॉ. ओ. पी. महात्मा, प्रदीप शर्मा सहित संभाग के गणमान्य लोग मौजूद थे।

'जार द किंग अवार्ड' से 23 सम्मानित

उदयपुर। रोटरी क्लब पन्ना और एम. स्क्वायर प्रोडक्शन एंड इवेंट का 'जार द किंग अवार्ड' समारोह अशोका पैलेस में हुआ। मुख्य अतिथि एनआईसीसी डायरेक्टर डॉ. स्वीटी छाबड़ा, मधु सरीन थीं। रोटरी क्लब पन्ना के अध्यक्ष अशोक पालीवाल ने बताया कि समारोह में फोटो जर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया, राजीव सुराणा, रजनीश गोस्वामी, नीतेश टांक, एन एल खेतान, गोविन्द अग्रवाल, नारायण चौधरी, यशवंत आंचलिया, राजेश कसेरा, रमेश सिंघवी, वेणुगोपाल, मनजीत सिंह, राजेश सिंघवी, पारस सिंघवी, जगदीश तेली, कमल शर्मा, रवीन्द्रपाल सिंह कप्पू, संजीत चौहान, नरेश कुमार बैयार, महेश अमिता, प्रकाश शर्मा को सम्मानित किया गया। इवेंट के सीईओ मुकेश माधवानी, राजेश शर्मा, तारिका भानु, प्रताप धायभाई, राकेश सेन मौजूद थे।

नव संकल्प पखवाड़ा का समापन

उदयपुर। दिव्य परिवार सेवा फाउंडेशन की ओर से 'स्वर्णिम उदयपुर-2020' नव संकल्प पखवाड़ा का शुभारंभ 15 जनवरी को मीठाराम मन्दिर में महंत हर्षितादास के सान्निध्य में गायत्री यज्ञ से हुआ। प्रवक्ता उमेश शर्मा के अनुसार यज्ञ के आचार्य घनश्याम पटवा थे। वीरेन्द्र बंसल, कमलेन्द्र सिंह पंवार, बसंती देवी वैष्णव, पूर्णिमा व्यास, प्रकाश वैष्णव, लोकेश चौधरी, हंस अग्रवाल सहित अनेक श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहूतियां दीं। संस्थापक-सचिव एडवोकेट भरत कुमावत ने महन्त हर्षिता दास, मुख्य अतिथि विष्णु शर्मा हितैषी, अध्यक्ष डॉ. ओ. पी. महात्मा, यज्ञाचार्य घनश्याम पटवा का स्वागत करते हुए पखवाड़े के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। 30 जनवरी को समाप्त हुए पखवाड़े में सुन्दरकांड पाठ, सुभाष बोस जयंती, रक्तवीर सम्मान, तिरंगा यात्रा, दिव्यांग खेलकूद, 'स्वच्छता के लिए सत्याग्रह' आदि कार्यक्रम हुए।

पार्षदों का अभिनन्दन

उदयपुर। अखिल भारतीय सालवी(बुनकर) महासभा संस्थान की बैठक किसान भवन में हुई। जिसमें सालवी समाज के पार्षदों का अभिनंदन किया गया। अध्यक्ष हीरालाल सालवी, एडवोकेट पीआर सालवी, बृजमोहन पछोला, शंकरलाल सालवी, पार्षद वेणीराम सालवी, पार्षद ललित कुमाल, जगदीश बाबरिया आदि मौजूद थे।

वस्त्र व्यापार संघ सम्मान समारोह

उदयपुर। श्री वस्त्र व्यापारी संघ का शपथ ग्रहण और सम्मान समारोह गत दिनों तेरापंथ भवन में हुआ। मुख्य अतिथि उपमहापौर पारस सिंघवी थे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मदनलाल सिंघटवाड़िया, उपाध्यक्ष सतीश पोरवाल, मंत्री वेदप्रकाश अरोड़ा, सहमंत्री अरूण लुणदिया, कोषाध्यक्ष भंवरलाल करदावाला, संगठन मंत्री एमके जोशी, प्रचार मंत्री दिनेश गोठवाल, आय-व्यय निरीक्षक भूपेन्द्र धाकड़, सांस्कृतिक मंत्री कुंदन सामोता और सदस्यों ने शपथ ली। कैलेण्डर विमोचन पूर्व सांसद रघुवीर मीणा, चेम्बर ऑफ कॉमर्स उदयपुर डिविजन मंत्री राजमल जैन ने किया। समारोह में परसराम अरोड़ा, गंभीरसिंह मेहता, नंदलाल वाधवानी, शशिकांत मेहता, कचरूमल मेहता, राजकुमार बन्डी, नवीनदास पारख, हसनभाई हीतावाला का सम्मान किया गया। संचालन अशोक पगारिया ने किया।

गीतांजली कैलेण्डर का विमोचन

उदयपुर। गीतांजली ग्रुप के कैलेण्डर 2020 का विमोचन गीतांजली ग्रुप के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, गीतांजली यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार भूपेन्द्र मंडलिया तथा गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतीम तम्बोली द्वारा किया गया।

समस्याओं के हल के लिए एकजुट हों : लूणावत

माइनिंग सम्बन्धी मुद्दों पर परिचर्चात्मक बैठक

उदयपुर। माइनिंग इण्डस्ट्री को लगातार कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इनके समाधान के लिए सभी उद्यमियों को एकजुट होना होगा। ऐसा नहीं होने पर वह दिन दूर नहीं जब यह उद्योग अनार्थिकत होकर बंद होने के कगार पर पहुंच जाएगा। यह विचार माइनिंग सब कमेटी के चेयरमैन एमएल लूणावत ने यूसीसीआई में 20 जनवरी माइनिंग संबंधी मुद्दों पर परिचर्चात्मक बैठक में व्यक्त किए। इसमें लगभग 50 माइनिंग उद्यमियों ने भाग

लिया। इंडियन सोपस्टोन प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के सचिव केजार अली ने माइनिंग संबंधी मुद्दों का ब्यौरा दिया। खेतान बिजनेस कॉर्पोरेशन के राजेन्द्र हरलालका ने माइनिंग संबंधी सुझाव रखे। मनोज स्वरूप, बच्चा प्रसाद, अभिषेक सिंघवी, हरीश अरोड़ा ने माइनिंग समस्याओं पर चर्चा की। इस दौरान खान विभाग से अनुमोदित रॉयल्टी संग्रहण ठेकेदार के कारण खनन उद्यमियों को पेश आ रही समस्याओं, खनिज परिवहन के लिए प्रयुक्त खाली वाहन का वजन वेबसाइट से लिए जाने से उत्पन्न विसंगति, मिनरल प्रोसेसिंग में अपव्यय होने वाले मल का समायोजन, ई-रवन्ना/ट्रांजिट पास को दूरी के अनुसार कनफर्म करने की समय सीमा निर्धारित करने, अति निम्न श्रेणी के खनिज पर रॉयल्टी की दर को लेकर विसंगति आदि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।

स्कूलों में स्टेशनरी वितरण

उदयपुर। जय हनुमान राम चरित मानस प्रचार समिति, सोजतिया क्लासेज, महावीर इन्टरनेशनल आदि के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय मदार व ब्राह्मणों की हुन्दर में सेवा शिविर आयोजित किया गया। जिसमे दोनों स्कूल के विद्यार्थियों को स्टेशनरी व चप्पलों का वितरण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सोजतिया ग्रुप के संस्थापक डॉ. आर. एस. सोजतिया थे। अध्यक्षता श्री ओमपुरी गोस्वामी ने की। अतिथियों का स्वागत मानस प्रचार समिति के संस्थापक पं. सत्यनारायण चौबीसा ने व मंच संचालन डॉ. ओ. पी. महात्मा ने किया।

श्याम सेवा ट्रस्ट ने स्कूल ड्रेस बांटी

उदयपुर। किशोरी श्याम सेवा ट्रस्ट ने खालसा पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, रामदास कॉलोनी में छात्रों को स्कूल ड्रेस बांटी। धीरेन्द्र सिंह सचान, प्रिंसिपल अमर सिंह चोरड़िया, महेन्द्र पाल सिंह छाबड़ा मौजूद थे।

प्रतिभा सम्मान

उदयपुर। रॉयल संस्थान में प्रतिभा सम्मान समारोह और नववर्ष हर्षोल्लास से मनाया गया। अध्यक्षता एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. एन. एस. राठौड़ ने की। मुख्य अतिथि मांगीलाल जोशी, विशिष्ट अतिथि डॉ. लोकेश जैन थे। निदेशक जी. एल. कुमावत ने बताया कि एमपीयूएटी में चयनित विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

हिन्दी पुरोधा देवपुरा स्मृति समारोह

'हर सिंगार' के विशेषांक का विमोचन करते डॉ. सी. पी. जोशी, देवकीनन्दन गुर्जर, श्याम देवपुरा, विट्ठल पारीक व अन्य।

नाथद्वारा। साहित्य मंडल की ओर से जनवरी के प्रथम सप्ताह में यहां हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पूर्व अध्यक्ष एवं साहित्य मंडल, नाथद्वारा के प्रधानमंत्री स्व. भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह आयोजित किया गया। मंडल के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा के अनुसार 6, 7, व 8 जनवरी को सम्पन्न समारोह के तहत राष्ट्रभाषा हिन्दी और संस्कृतिप्रेमियों का सम्मान, बाल साहित्यकारों का सम्मान, बाल रचना शिविर, कवि सम्मेलन, पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें देश के नामचीन साहित्यकारों की सहभागिता रही। मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सी. पी. जोशी व विशिष्ट अतिथि देवकीनंदन गुर्जर थे। अतिथियों ने साहित्य मण्डल की त्रैमासिक पत्रिका 'हरसिंगार' के बाल साहित्य विशेषांक का विमोचन किया। मंडल के व्यवस्थापक प्रद्युम्न प्रकाश देवपुरा ने बताया कि पं. महेश बोहरे राधोगढ़, डॉ. शशिबाला शर्मा आइजोल, रामेश्वर शर्मा कोटा, श्रीनिवास राव हैदराबाद, भगवती प्रसाद गौतम कोटा, उदयभान तिवारी 'मधुकर' जबलपुर, विट्ठल पारीक जयपुर, विनोद बब्बर दिल्ली, डॉ. श्याम मनोहर व्यास उदयपुर व प्रमोद सनाढ्य नाथद्वारा ने बाबू भगवती प्रसाद देवपुरा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर पत्रवाचन किए।

हेमंत बने अध्यक्ष

उदयपुर। छाजेड़ परिवार मंडल(संस्थान) सर्वानुमति से वर्ष 2020-22 के लिए हेमंत छाजेड़ को अध्यक्ष मनोनीत किया है। चुनाव अधिकारी विजय सिंह छाजेड़ व सहायक चुनाव अधिकारी तेजसिंह छाजेड़ थे। अध्यक्ष हेमंत छाजेड़ कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए संरक्षक दयाल सिंह छाजेड़ व विजय सिंह छाजेड़, मार्गदर्शक तेजसिंह मोदी व एस के जैन, उपाध्यक्ष सुनील छाजेड़ व रमेश चंद्र छाजेड़, मंत्री-श्याम सुंदर छाजेड़, संयुक्त मंत्री रंजना छाजेड़ व राजेन्द्र कुमार जैन, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र कुमार छाजेड़, संगठन मंत्री राजेन्द्र सिंह मोदी, सांस्कृतिक मंत्री नीता छाजेड़ को मनोनीत किया।

पंड्या और भाटी का सम्मान

उदयपुर। कृषि मंडी व्यापारी समिति ने कृषि उपज मंडी समिति के अतिरिक्त निदेशक संजीय पंड्या और सचिव शिवसिंह भाटी का सम्मान किया। समिति अध्यक्ष अशोक पाहुजा, सुनील कालरा, जगदीश कस्तूरी, प्रीतम दास, दिलीप कटारिया मौजूद थे।

इन्टेक कन्वीनर बनी - वन्दना वजीरानी

चित्तौड़गढ़। इन्टेक के राष्ट्रीय अध्यक्ष सी. टी. मिश्रा द्वारा चित्तौड़गढ़ इन्टेक चैप्टर के गठन के साथ ही इसके कन्वीनर के लिए वन्दना वजीरानी को मनोनीत किया है। वजीरानी चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि. की प्रबन्ध निदेशक हैं। कई सामाजिक संस्थाओं में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रही हैं। गत वर्ष सितम्बर में ही गोवा में वजीरानी को राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट एमडी अवार्ड से नवाजा गया था। इनके मनोनयन पर इन्टेक प्रदेश अध्यक्ष महाराजा गजसिंह, हरिसिंह पालकिया व कैप्टन अरविन्द शुक्ला ने शुभकामनाएं दी हैं। कन्वीनर मनीष मालीवाल को नियुक्त किया गया है।

एडीएम मुकेश कलाल ने वजीरानी को कार्ड प्रदान कर व इन्टेक की पिन लगाकर चित्तौड़गढ़ में इन्टेक की गतिविधियों को प्रारम्भ करने के लिये शुभकामनाएं प्रेषित की।

जेके खदानों में पर्यावरण संरक्षण सप्ताह

निम्बाहेड़ा। भारतीय खान ब्यूरो के तत्वावधान में जनवरी के दूसरे सप्ताह में जे. के. सीमेन्ट की पांचों खदानों में 30वें खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में यूनिट हेड एस. के. राठौड़ ने प्राकृतिक संसाधनों के संयमित दोहन की आवश्यकता प्रतिपादित की। कार्यक्रम में हेड खदान महिम कच्छवाह, कन्वेनेयर प्रभारी राजेश चौधरी, संजय जैन, निरीक्षण दल के बाबूलाल, अमित शर्मा, पदमा राजू, तुषारकांत पॉल, श्रमिक संघ अध्यक्ष नाहर सिंह देवड़ा, विशिष्ट अतिथि थे। समारोह में लाला कैलाशपत सिंघानिया पब्लिक स्कूल के बालकों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। श्री आर. के. रवि ने पर्यावरण व खनिज संरक्षण की शपथ दिलाई।

तैलिक साहू समाज : कन्हैयालाल अध्यक्ष

उदयपुर। तैलिक साहू समाज पंच महासभा सेवा समिति की बैठक में महासभा के छह पदों के लिए चुनाव हुए। इसमें अध्यक्ष कन्हैयालाल साहू, महामंत्री एडवोकेट हेमेन्द्र पडियार, उपाध्यक्ष नारायण चन्द्र साहू, मंत्री मीठालाल गटकनिया, संसदीय मंत्री भरत पचलोडिया, कोषाध्यक्ष पिन्टू नैणावा को चुना गया। चुनाव अधिकारी देवेन्द्र जखार थे।

मुजीब सदर

उदयपुर। अन्जुमन तालीमुल इस्लाम के वर्ष 2019-24 के आम चुनाव में सभी प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित हुए। चुनाव कमेटी के कन्वीनर अमजद खान ने बताया कि सदर मुजीब सिद्दीकी, नायब सदर मोहम्मद अशरफ खान, सेक्रेट्री आबिद खान पठान व ज्वाइंट सेक्रेट्री मोहम्मद उमर फारूक निर्वाचित घोषित हुए।

शोक समाचार

उयदपुर। समाजसेवी-उद्यमी श्री करणसिंह जी मोगरा(पूर्व अध्यक्ष, उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज) का 29 दिसम्बर 2019 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अनेक औद्योगिक संगठनों व समाजसेवी संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। अपने प्रगतिशील विचारों के लिए वे सदैव याद रखे जाएंगे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र अंशुल व पुत्री शिल्पा सहित पौत्री, दोहित्र व दोहित्री सहित भाई-भतीजों का वृहद सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन से उद्योग जगत ने अपना प्रखर मार्गदर्शक खो दिया है।

कोटा। भारत व पाकिस्तान के बीच 1965 व 1971 के युद्ध में भाग लेने वाले स्थनीय महावीर नगर निवसी लेफ्टिनेंट कर्नल गोविन्द प्रसाद शर्मा का 12 जनवरी को निधन हो गया। वे 76 वर्ष के थे। गार्ड ऑफ ऑनर के साथ उनका अन्तिम संस्कार किशोरपुरा मुक्तिधाम में किया गया। उन्हें पश्चिमी स्टार, संग्राम मेडल, सैन्य सेवा मेडल सहित भारतीय सेना द्वारा शौर्यपरक कार्यों के लिए विभिन्न सम्मान प्रदान किए गए। उनका जन्म जिले के धूलेट कस्बे में 15 नवम्बर 1944 को परशुराम शर्मा के घर हुआ था। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी विद्या शर्मा, भ्राता सरपंच नरोत्तम शर्मा, पुत्रियां श्रीमती प्रभा, रमा, उषा व मधु शर्मा तथा दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री बृजलाल जी पाडलिया (क्रिएटिव प्रोपर्टीज एण्ड डेवलपर्स) का 3 जनवरी 2020 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती वीना देवी, पुत्र प्रदीप, मुकेश, पंकज पाडलिया व पुत्री श्रीमती शीला सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। वे शिक्षाविद् एवं कुशल प्रबंधक के रूप में अपने कर्मक्षेत्र में ख्यात थे।

उदयपुर। समाजसेवी श्रीमती कलावती देवी जी अग्रवाल (पत्नी स्व. रणजीतलाल जी अग्रवाल) का 7 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र तुषीरकांत व विनयकांत, पुत्री शैलजा सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। नगर विकास प्रन्यास के पूर्व चेयरमैन एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता स्व. श्री गिरिधारीलाल शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णकान्ता जी का 31 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे 90 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे पुत्र प्रकाश शर्मा, पुत्रवधू(स्व. मनोज) पुष्पा, पुत्रियां नलिनी व ममता जोशी सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा, विधानसभाध्यक्ष सी. पी. जोशी व विधायक गजेन्द्र सिंह शक्तावत ने गहरा दु:ख प्रकट किया है।

उदयपुर। नल मजदूर फैडरेशन(इन्टक) के पूर्व प्रान्तीय मंत्री श्री किशन जी सुराला का 15 जनवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती मांगीबाई, पुत्र हुकमराज, भावेश एवं राजकुमार तथा पुत्रियां मंजू व प्रभा सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। इण्टक के प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली, श्रमिक नेता अशोक तम्बोली सहित अनेक श्रमिक संगठनों से जुड़े नेताओं ने उनके निधन पर दु:ख व्यक्त किया।

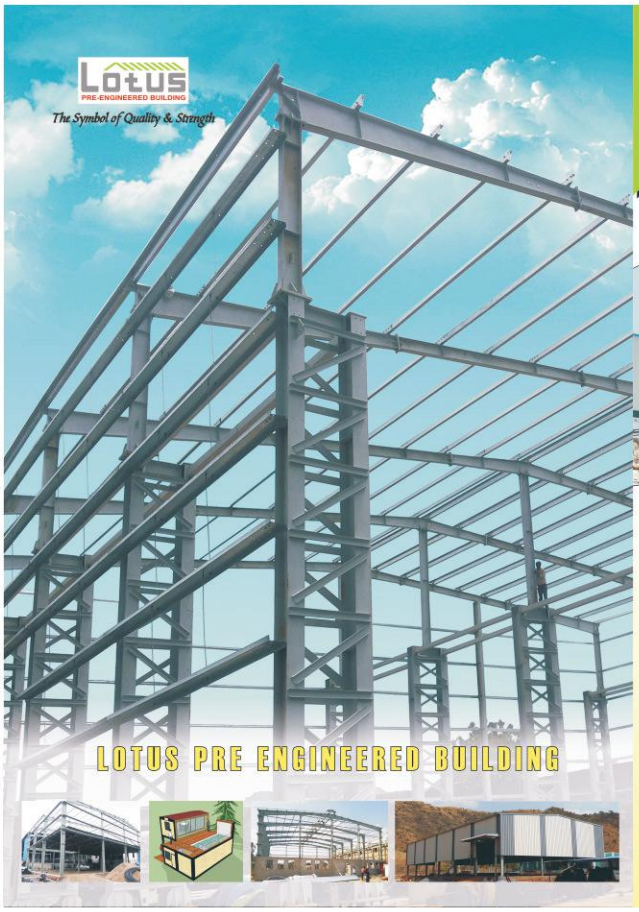

Quality, Honesty & Integrity Guaranteed

Lotus
PRE-ENGINEERED BUILDING

The Symbol of Quality & Strength

www.lotushitech.com

We are specialised with experience in the field of Structural Work of Pre Engineered Building System

We Provide :

- PEB
- Turnkey solution for Industries
- Machinery / Side work
- Interior & Exterior
- Manufacturing & Supplier
- Erection services

Lotus hi-tech Industries

An ISO 9001 : 2015 Certified Company

F-34 A, Road No.5, M.I.A., Madri, Udaipur (Raj.) 313003
Phone : 9001970333, Mob.:9314141715, 9829048372
E-mail : lotusremson@gmail.com, Website : www.lotushitech.com

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दी बांसवाड़ा सैन्ट्रल को–ऑपरेटिव बैंक लि.

दुरभाष :– 02962–242973, 243784 फैक्स :– 02962–241375
वेबसाइट:– www.banswaraccb.com ई–मेल:– ccb_banswara@ymail.com

प्रगति के बढते आयाम

(राशि लाखो में)

पूंजी एवं रक्षित कोष	संग्रहित लाभ	जमाए	ऋण व्यवसाय	कार्यशील पूंजी
5472.49	587.96	34409.38	18910.26	58048.64

रिजर्व बैंक द्वारा जारी लाईसेंस धारक

सुरक्षित बचत एवं उत्पादकता

पूंजी पर्याप्तता अनुपात (CRAR)11.41%

राज्य सरकार की भागीदारी से प्रायोजित

जमाएं डिपोजिट इंश्योरेन्स कॉरपोरेशन द्वारा बीमित

पूर्ण कम्प्यूटरीकृत बैंक

राज्य सरकार की हिस्सेदारी वाली जिले में एकमात्र बैंक। एकमात्र बैंक जिसमें राज्य सरकार द्वारा गत दो वर्षो में अल्पकालीन फसली ऋण माफी योजना लागु की गई है एवं जिलें के कृषको को 310 करोड से अधिक राशि की कर्ज माफी प्रदान की गई है।

(अनिमेष पुरोहित)
संयुक्त रजिस्ट्रार
प्रबंध निदेशक

(अन्तर सिंह नेहरा)
भारतीय प्रशासनिक सेवा
जिला कलक्टर एवं प्रशासक

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

वाशिंग पाउडर

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
F-264, F-264A, RIICO Ind. Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India
CIN : U15412RJ2005PTC020174

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

MARUTI SUZUKI ARENA

कारों की एक नई दुनिया का अनुभव
जो इससे पहले कभी नहीं था.

मेवाड़ का पहला मारूति सुजुकी अरिना
अब आपके करीब

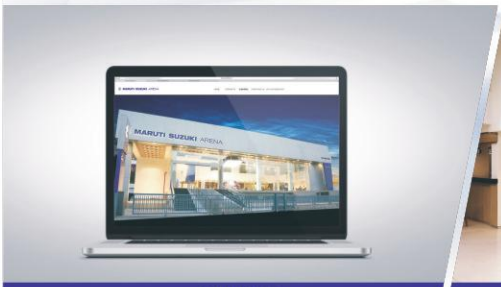

WEBSITE
Cutting-edge technology to help you book with just one click.

NAVIGATION PORTAL
The connected experience to give you a warm welcome.

PRODUCT VISION
Interactive screens to help you choose the right car for you.

CAFE
Freshly brewed coffee to warm up your experience.

PERSONALIZATION ZONE
Hi-tech screens to customise your car according to your personality.

E-BOOK TODAY AT WWW.MARUTISUZUKI.COM OR VISIT YOUR NEAREST MARUTI SUZUKI DEALERSHIP.

WAGONR | ALTO 800 | ERTIGA | VITARA BREZZA | DZIRE | SWIFT | CELERIO X | EECO

TECHNOY MOTORS INDIA PVT. LTD.

1/3 - Swarna Jayanti Park, Goverdhan Vilas, Udaipur (Raj.)

Ph. : 0294-2485158, 2485738, 9982666809

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोनः 0294-2492441 फैक्स : 0294-2492440
E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

प्रवेश प्रारम्भ-2019-20

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, फोन : 0294-2413029,2410776, मो. 9829160606
फेकल्टी ऑफ सोशल साइन्सेज एण्ड ह्यूमिनिटीज

•बी.ए.•एम.ए. •एम.फिल डिप्लोमा कोर्सेज : •पीजी डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेन्सिंग, बी.जे.एम.सी., पंचगव्य पद्धति (थैरेपी)।
सर्टिफिकेट कोर्सेस : •स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिशियंसी इन इंग्लिश एण्ड कम्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मेथड्स एण्ड डेटा एनालिस्ट, ह्यूमन राइट्स।

फैकल्टी ऑफ कॉमर्स,फोन : 0294-2413029,2410776, मो. 9460275655

•बी.कॉम •बी.बी.ए. •एम.कॉम •एम.आई.बी., •एम.फिल.,
•मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट।
डिप्लोमा कोर्स : •पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट।
सर्टिफिकेट कोर्सेस : •प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग स्किल्स, टेली, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (जी.एस.टी.)।

फैकल्टी ऑफ साइंस,फोन : 9461179656, 9461109371

•**B.Sc.** (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
•**M.Sc. Chemistry** (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
•**M.Sc. Mathematics**

ज्योतिष विज्ञान विभाग, मो. 9460030605

•एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान •डिप्लोमा ज्योतिष •डिप्लोमा वास्तु •प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्म काण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

सायंकालीन महाविद्यालय मो. 9829332300

बी.ए., बी.कॉम, एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एस.सी. (मनोविज्ञान) एम.ए. (म्यूजिक), बी.लिब, एम.लिब, बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.सी.बी.आई, डी.एड (आर.सी.आई से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं कांउसलिंग, बी.जे.एम.सी. एवं डी.जे.एम.सी.।
Department of Physical Education (Evening College) Phone: 9352500445
•Diploma in Yoga •M.A. in Yoga •M.A. In Physical Education

Physical Education (शारीरिक शिक्षा) मोबाइल : 9829943205, 9352500445

•मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) •MA (YOGA Education)

डिपार्टमेन्ट ऑफ लॉ, मोबाइल 9414343363, 9928246547

•LL.B. •LL.M. (2 Years) •B.A.LL.B (5 Years) •PGDCL •PGDLFS •PGDLL

डिपार्टमेन्ट ऑफ फिजियोथेरेपी फोन : 0294-2656271 मो. 9414234293

•मास्टर ऑफ फिजियोथैरेपी •बेचलर ऑफ फिजियोथैरेपी •PhD in physiotherapy
•Fellowship in palliative care and oncology rehabiliatation
•Fellowship in neurological rehabiliatation

फैकल्टी ऑफ कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंफोरमेशन टेक्नोलॉजी
(फोन : 2494227, 2494217, मोबाइलः 9887285752)

•**MCA** •**M.Sc.** (Computer Science) •**PGDCA** •**BCA** • **MCA** (Lateral Entry)

फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग-राजस्थान विद्यापीठ टेक्नोलॉजी कॉलेज
मो.9950304204 फोनः 0294-2490210

•**Diploma** - सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग
•**Diploma in Engineering** (सिविल आदि)

इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज (साहित्य संस्थान) (फोन 0294-2491054)

•M.A.. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
•PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क (फोन 0294-2491809)

•**MSW** •पी.जी. डिप्लोमा-**HRM** •**NGO** मैनेजमेन्ट •**Post Graduate Diploma in Rural Development (PGDRD)**

डायरेक्ट्रेट ऑफ जनशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम (फोन : 2490723)

• **PG Diploma in Computer Applications**

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, डबोक

• **B.Sc.** (Hons.) Agriculture (कृषि)

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन
लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डबोक (फोन : 0294-2655327, 2657753)

•एम.फिल.• एम.एड.
•एम.ए. (एजुकेशन) •बी.एड. •बी.ए./ बी.एस.सी., बी.एड. (इंटीग्रेटेड)
•बी.एड.(बाल विकास) •डी.एल.एड. •एम.पी.एड. •बी.एड.-एम.एड (इंटीग्रेटेड)

कन्या महाविद्यालय, डबोक (फोनः 0294-2655327,मो. 9460856658, 9694881447)

•**B.A.**• **B.Com.**• **B.Sc.**• **M.A.** • **M.Com** • **M.A. (Hindi, Pol. Sc., History, Geog, Sociology, Economics)** • **M.Com (Accountancy)**
• **Special classes for English Speaking and Computer Basics**

आर.वी. होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, डबोक
(फोन : 0294-2655974, 2655975, मोबाईल : 09414156701, 09351343740)

• बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी **(BHMS)**

फैकल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज (एफ.एम.एस.)
(फोनः 0294-2490632 मोः 9461260408, 9782049628)

• **MBA** • **MHRM**

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department